शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज

235/179, अतरसुइया, प्रयागराज-211003 फोन/फैक्स : 0532-2452224
Website : www.skicallahabad.com E-mail : skicalld@gmail.com

शतोत्सव

वीथिका
2019-20

प्रार्थना

हे प्रभो आनन्ददाता ! ज्ञान हमको दीजिए,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें,
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीरव्रत धारी बनें।
हिन्द में पैदा हुए हैं, हिन्द की संतान हैं,
हिन्द की सेवा करें, वरदान ऐसा दीजिए।
प्रेम की गंगा बहे दिल में हमारे रात–दिन,
तुमको कभी भूलें नहीं, सद्ज्ञान ऐसा दीजिए।
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युत–शंकरप्रभृतिभिर्देवै: सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती नि:शेष जाड्यापहा।।

राष्ट्र गान

जन–गण–मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता !
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा,
द्रविड़, उत्कल, बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंग !
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तब जय गाथा !
जन गण मंगल दायक जय हे,
भारत–भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे ।

वीथिका
2019-20

प्रकाशन मण्डल

संरक्षक

श्री लालचन्द्र पाठक
(प्रधानाचार्य)

प्रधान सम्पादक

श्री धर्मबीर सिंह

सह-सम्पादक
एवं चित्र संयोजन

श्री विश्वनाथ मिश्र

शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज
प्रयागराज

सन्देश

जीवन की धारा शाश्वत है यह लगातार गतिमान है। परिस्थितियाँ, घटनायें, जीवन के मूल्य लगातार बदलते रहते हैं। समाज की अपेक्षा एवं आवश्यकता के अनुरूप उन्हें निरन्तर अपनाने तथा आत्मसात् करने से ही एक मजबूत समाज का निर्माण संभव होता है। समाज में विशेषतया शिक्षकों से इस पुनीत कार्य को करते रहने की अपेक्षा अधिक होती है तभी आने वाली पीढ़ियों तथा उनके संस्कार सुरक्षित एवं पल्लवित रहते हैं।

पाठशाला अपनी वार्षिक पत्रिका 'वीथिका' का नवीन संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। 'वीथिका' अपने गुणवत्तापूर्ण लेखों से समाज में सराहना प्राप्त करेगी। ऐसी शुभकामना के साथ प्रकाशन मण्डल को हार्थिक बधाईयाँ देता हूँ।

अरूण टण्डन
निवर्तमान न्यायमूर्ति
इलाहाबाद हाईकोर्ट, इलाहाबाद

अध्यक्ष
श्री राजीव खन्ना

दी सारस्वत खत्री पाठशाला
(पंजीकृत सोसायटी संख्या 6/1928-29)
179, अतरसुईया, प्रयागराज

सन्देश

लोकोपकारक लाला सदनलाल खन्ना जी ने सन् 1921 में बसंत पंचमी के पावन पर्व के दिन पाठशाला की स्थापना कर समाज में गुणवत्ता युक्त शिक्षा का सपना देखा था, जिसे विद्यालय के शिक्षकों ने समय–समय से आगे बढ़ाने का कार्य कुशलता पूर्वक किया है।

पाठशाला का स्वर्णिम एवं गौरवमयी इतिहास मेरे आँखों के समक्ष आ रहा है, कैसे इस ज्ञान के मंदिर ने अपने अतुलनीय 99 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण किए और अब हम **शताब्दी वर्ष** में प्रवेश कर चुके हैं। यह हम सभी के लिए गौरव की बात है साथ ही यह किए गए अपरिमित श्रम, संघर्ष की जीवंत गाथा भी है। निःसंदेह प्रबन्ध–तंत्र एवं शिक्षक इससे जुड़कर बधाई के पात्र हैं।

अपने सौवें वर्ष में पाठशाला वार्षिक पत्रिका **'वीथिका'** का नवीन संस्करण लेकर प्रस्तुत है यह स्वागत योग्य है। गुरुजन सौ वर्ष के इतिहास का सिंहावलोकन करते हुए एक नयी ऊर्जा एवं पावन उद्देश्य से पुनः इस पावन यज्ञ में जुट जाएँ।

गुरुजन व छात्रों के ज्ञानवर्द्धक लेखों से पत्रिका अपने लक्ष्य को अच्छी तरह प्राप्त करे ऐसी अपेक्षा के साथ मैं पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु प्रधानाचार्य एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाइयाँ देता हूँ।

(राजीव खन्ना)
अध्यक्ष
सारस्वत खत्री पाठशाला सोसाइटी
प्रयागराज

सन्देश

परमपिता एक लक्ष्य विशेष देकर हम सभी को इस पावन धरा पर भेजता है। उस लक्ष्य को समझकर उसमें अपना सर्वस्व समर्पित कर देना प्रत्येक मनुष्य का अनिवार्य कर्तव्य है। दिन-रात उस लक्ष्य को साधना-पूरा करना हम सभी के जीवन का यज्ञ है। कभी-कभी यह लक्ष्य हमें स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ता। रास्ता अंधेरे में डूबा-सा लगता है। ऐसे दुरूह समय में शिक्षा वह आलोक लेकर आती है जो हमारे मार्ग एवं लक्ष्य को प्रशस्त करता है। शिक्षा के पुनीत यज्ञ में संलग्न गुरूजन इस महत्ता को समझकर अपने कार्य को शुचिता से पूरा करते हुए एक प्रकार से प्रभु के लक्ष्य को साधने का ही कार्य करते हैं। गुरूजन अपने पावन दायित्व का निर्वाहन करते रहें।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'वीथिका'** का प्रकाशन स्वागत योग्य है। समाज से जुड़ने का यह एक सशक्त माध्यम है। **'वीथिका'** का नवीन संस्करण समाज में सराहना प्राप्त करें, ऐसी आशा के साथ पत्रिका के सफल सम्पादन की ढेर सारी अग्रिम बधाई प्रेषित करता हूँ।

वीरेन्द्र मोहिले
अध्यक्ष
प्रबन्ध समिति : शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कालेज, इलाहाबाद

सन्देश

विद्या मनुष्य को सभी अवगुणों-व्याधियों से मुक्त करती है और साथ ही साथ मनुष्य के अंतःकरण के सर्वोच्च तथा श्रेष्ठ मूल्यों को प्रकट भी करती है इस कसौटी के धरातल पर पाठशाला निरंतर अपने लक्ष्यों, मूल्यों को प्राप्त करती आ रही है। यशःशेष देवतुल्य पूर्वजों द्वारा रोपित यह पाठशाला अपने शतक वर्ष में प्रवेश कर चुकी है हम सभी के लिए यह गौरव एवं असीम हर्ष का विषय है। सन् 1921 में लिए गए संकल्प आज भी प्रासंगिक है। आज यह शहर दक्षिणी की ख्यातिलब्ध ज्ञान संस्था है जिसको समाज के प्रत्येक वर्ग का सम्मान एवं स्नेह प्राप्त है। गुरूजन इसकी गुणवत्ता एवं समाज में प्राप्त होने वाले इसके सम्मान को बनाए रखेंगे। ऐसी हम सबकी अपेक्षा है।

पाठशाला की वार्षिक पत्रिका 'वीथिका' का नवीन संस्करण प्रकाशित होने को है यह मेरे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है। वीथिका के ज्ञान वर्द्धक लेख एवं प्रकाशित सामग्री समाज को नई चेतना से भरेंगे ऐसी आशा है। अंत में वीथिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन की प्रभु से प्रार्थना करते हुए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाईयाँ देता हूँ।

अमित खन्ना
सचिव
सारस्वत खत्री पाठशाला सोसाइटी प्रयागराज

नीना श्रीवास्तव
सचिव
माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश

सन्देश

शिक्षा, संस्कार एवं समाज एक-दूसरे के पूरक है क्योंकि शिक्षा ही संस्कारों को मजबूती प्रदान करते हुए अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति और अनुभूति के साथ हमें समाज के प्रत्येक अवयव से अवगत कराते हुए निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में आदर्शपूर्ण 'विद्यालयी-शिक्षा' हमारे व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हुए परिवार, समाज और राष्ट्र को भी मजबूती प्रदान करती है।

यह अत्यन्त हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि ''शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज, प्रयागराज से प्रत्येक वर्ष प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'वीथिका' समाज, शिक्षा, विद्यालयी-परिवेश एवं छात्रों को समर्पित होकर नित-उन्नयन का कार्य करती है तथा साथ ही यह उभरती हुई प्रतिभाओं को मंच देते हुए अपने ''भाव-प्रकाशन'' से शिक्षा-जगत और समाज के अन्तर्मन को भी समृद्ध करती रही है।

अतः विगत वर्षों की भाँति यह पत्रिका इस वर्ष भी अपनी संकल्प और अवधारणा को परिपूर्णता प्रदान करते हुए शिक्षा, समाज और राष्ट्र को समृद्ध करने में सफलता प्राप्त करे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

नीना श्रीवास्तव
सचिव
माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश

आर. एन. विश्वकर्मा
पी.ई.एस.
जिला विद्यालय निरीक्षक
प्रयागराज

सन्देश

विद्यालय शिक्षा का उद्देश्य बहुआयामी होता है जिससे नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ शिक्षार्थियों को जीवन के प्रत्येक अवसर हेतु तैयार किया जाता है। शिक्षार्जन के साथ-साथ जीवन के व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान कराया जाता है जिससे छात्रगण प्रचुर एवं सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण होकर भविष्य में समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वाहन कर सकते हैं। शिक्षार्थी राष्ट्र के नौनिहाल हैं जिनका सर्वांगीण विकास करना प्रत्येक शिक्षक का परम कर्तव्य है। इन्हीं नौनिहालों को भविष्य के भारत का निर्माण करना है जिससे विश्व बन्धुत्व एवं नैतिक मूल्यों का संवहन अखिल विश्व में किया जा सके।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'वीथिका' का नवीन संस्करण इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति का माध्यम बनेगा, ऐसी मेरी आशा है। सम्पादक मण्डल को सफल प्रकाशन हेतु मेरा शुभाशीष।

आर. एन. विश्वकर्मा
जिला विद्यालय निरीक्षक
प्रयागराज

सन्देश

मनुष्य सम्पूर्ण प्रकृति का सर्वोत्तम प्राणी है। ईश्वर ने उसकी रचना प्रकृति के संरक्षण एवं पोषण हेतु की है। जिसकी जीवन अपने लिए कम दूसरों हेतु अधिक समर्पित है। इन्हीं मूल्यों, संस्कारों का संवहन हम सबको सम्पूर्ण धरा पर करना है। जीवन का मूल्यांकन समाज एवं देश के प्रति हम कितना समर्पित हैं इसी बिन्दु पर होता है। अपने जीवन से दूसरों हेतु प्रेरणा बन जाना, समाज में अपने ज्ञान के आलोक से नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना प्रत्येक शिक्षक का प्रथम एवं पुनीत कर्तव्य है। सारस्वत खत्री पाठशाला की संस्थापना का यही मूलतः उद्देश्य रहा होगा, जिसमें निःस्वार्थ समाज सेवा भावे से हमारे पूर्वजों ने इस संस्था की प्राण-प्रतिष्ठा की होगी। आइए मिलकर हम सब उन्हीं लक्ष्यों को और सुदृढ़ करने की पावन प्रतिज्ञा लें।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'वीथिका'** गुरूजन एवं छात्रों के लेखों से आच्छादित रहती है। वर्ष भर होने वाली गतिविधियों की रंगारंग छवि भी इसके सौन्दर्य को बढ़ाती है। **'वीथिका'** अपने उद्देश्य को निरन्तर प्राप्त करती रहे इसी शुभाशीष के साथ इसके सफल प्रकाशन एवं सम्पादन की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

धीरज खन्ना
प्रबन्धक : शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कालेज
प्रयागराज

प्रधानाचार्य के मष्तिक पटल से ...

'कोई अपनी खुशी के लिए गैर की रोटियाँ छीन ले हम नहीं चाहते,
छीटकर थोड़ा दाना कोई उम्र की हर खुशी बीन ले हम नहीं चाहते।
हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा और किसी के लिए इक चटाई ना हो,
इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें, जिन्दगी आँसुओं से नहायी ना हो।
शाम सहमी ना हो रात हो ना डरी, भोर की आँख फिर डबडबायी ना हो॥'

रत्न प्रशविनी, गहरी हरीतिमा से संतृप्त, नैसर्गिक अनुपम छटा से ओत-प्रोत, सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के भाव से सारगर्भित एवं लौकिक तथा अलौकिक तत्वज्ञान से अविभूत रत्न गर्भा इस वसुधा पर मानव का अस्तित्व एवं उद्भव तथा विकास एक ऐसी संस्कृति एवं सभ्यता के सम्यक आगाज़ का सूचक है जहाँ से विजयिनी मानवता का धर्म ध्वज आत्म-ज्ञान के अंतरिक्ष में प्रहरी की भाँति स्थिर होकर हमारी आत्म-शक्ति को सार्वभौमिक सम्बल प्रदान करता है। धन्य हैं वे लोग जिन्हें परमपिता परमेश्वर ने देश तथा समाज में उत्कृष्ट कार्य हेतु सुअवसर प्रदान कर उनके जीवन को धन्य एवं जीवनोपयोगी बनाया है। इस वसुन्धरा पर मानव जीवन का मूल मंत्र है - सत्कर्म, सद्भाव एवं सद्विचार जिसकी शीतल छाया में जन-मानस के हितों की सुरक्षा हेतु क्रांति एवं संघर्ष के बीच प्रस्फुटित, पुष्पित एवं पल्लवित होते हैं। जीवन उत्सव का नाम है, सौन्दर्य का पर्याय है, सभ्यता की धरोहर एवं संस्कृति की विरासत है। यही हमारी पहचान है और हमारा कर्म भी। निराशा एवं हताशा से ग्रसित एवं आच्छादित हे युवा शक्ति ! संघर्ष करना सीख। आत्म निन्दा छोड़, आत्म-बल पर यकीन कर। दुर्बलों की रक्षा एवं निशाचरों के विनाश हेतु अपने आध्यात्मिक कैरियर का चक्रसुदर्शन उठा एवं कुचक्र, कुशासन, कुपोषण, कुरीति, कुनीति व कुप्रथा के महाभारत में अन्याय, अंधविश्वास तथा भ्रष्टाचार के दुर्योधन की आत्मा का सर्वविनाश कर असहाय एवं असहज होते समाज में कर्तव्य परायणता एवं कुशल प्रशासन व निष्पक्ष न्याय के धर्मयुग का सूत्रपात कर देश को सशक्त एवं आत्म-निर्भर बनाकर शांति के प्रथ प्रदर्शक की भूमिका अदा कर।

आज का मानव संसाधन युक्त है पर सुख विहीन। खुशहाली का अनुभव करता है पर आत्मा की मुस्कुराहट खो बैठा है। आँख से अश्रुधार तो बहती है पर पता नहीं ये अश्रु मोती सुख के हैं या दुःख के। आज हमारी जीवन शैली यथार्थता से कहीं परे होती जा रही है। हम हँसते तो हैं पर मुस्कुराना भूल गये हैं :

'आँसू हों गम खुशी के होते हैं एक जैसे।
इन आँसुओं की कोई पहचान नहीं होती॥'

लक्ष्य निर्धारण की असहजता हमारी युवाशक्ति के बिखराव एवं भटकाव को जन्म देती है जहाँ से प्रारम्भ होती है मानव संस्कृति एवं सभ्यता के विनाश की डगर। जीवन में लक्ष्य निर्धारण की भूमिका बेहद् कठिन होती है। हमें ध्यान देना होगा कि हमारी सोच एवं हमारा कार्य सृजन का पथगामी हो। ध्यान रहे ! हम नश्वर हैं। हमारी उत्तम कृति एवं हमारा अनुकरणीय कार्य ही हमें अमर एवं अनुकरणीय बनाता है। मृत्यु का भय हमें कायर एवं कापुरूष बनाकर हमारे अस्तित्व का विनाश करता है जिसका पाप हमारी भावी मानवता को भुगतना पड़ता है। आशक्ति कर्तव्य से हो, अस्थि चर्म मय काया से नहीं :

'विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी।
जियो परन्तु यूँ जियो की याद जो करें सभी॥''

- मैथिलीशरण गुप्त

महापुरूष की सफलता उसके आत्मबल, समाजोपयोगी कार्य एवं उत्कृष्ट आचरण पर निर्भर करती है। जीवन को डर कर जीना करोड़ों मौतों के बराबर है। समस्याओं का समाधान संघर्ष से होता है, पलायन से नहीं।

"Cowards die many times before their deaths;
The valiant never taste of death but once."

—William Shakespeare

देश एवं समाज के सजग प्रहरी हे युवा शक्ति ! बिलखती मानवता तुम्हें चीख-चीख कर पुकार रही है। उठो ! जागो एवं लक्ष्य को प्राप्त करो।।

''उत्तिष्ठ ! जाग्रत ! प्राप्य वरान्निबोधत॥''

भविष्य की धरोहर एवं वर्तमान के रक्षक हे यूथ ब्रिगेड ! तुम भगवान शिव के त्रिशूल, भगवान विष्णु के चक्र सुदर्शन, देवराज इन्द्र के वज्र एवं अर्जुन के गाण्डीव रूपी अदम्य आत्मबल, आत्मशक्ति एवं आत्मज्ञान से समाज को भय, भूख एवं भ्रष्टाचार के दानव से मुक्त कराकर देश की दिशा एवं दशा प्रशस्त करो-

"The blind world stumbleth on its round of pain;
Rise, O India's son ! Wake ! Slumber not agin !
Leave love for love of lovers, for woe's sake
Quit comfort for sorrow, and deliverance make."

समय का क्रांतिकारी चक्र सदैव गतिमान रहता है। धीर वीर एवं गंभीर व्यक्ति सुख-दुःख से परे रहकर अपने कर्तव्य को अंजाम देकर अपना जीवन धन्य करते हैं। कर्तव्य परायण व्यक्ति सदा एक जैसी स्थिति का आनन्द उठाता है। भगवान भाष्कर की अरूण कांति उदय एवं अस्त की सीमा से परे रहती है।

'उदेति सविता ताम्रः, ताम्रः एवास्तमेति च।
संपत्ती च विपत्ती च महतामेकरूपता॥'

शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बुनियाद प्रशस्त करता है। सद्गणों का अभ्युदय चारित्रिक विकास की राह प्रशस्त करता है। हमारी संस्कृति सार्वभौमिकता में यकीन रखती है। परमार्थ ही हमारा जीवन व जीवन लक्ष्य है। हम गाय को रोटी खिलायें पर भूखे मनुष्यों की क्षुधा शांत करना भी हमारा दायित्व है। दीपक जलाकर अंधेरा दूर करें पर ज्ञान के दीपक से अज्ञानता के अंधकार को भी दूर करें। हमें 'परित्राणाय साधुनाम विनाशय च दुष्कृताम' में विश्वास करना चाहिए। अंध-विश्वास से उठकर यथार्थता का सामना करें -

'मेरे शहर को बैनरों से ढाँपने वालों,
लाखों लोग यहाँ बेकफ़न भी मरते हैं॥'

हम परमार्थ की सोचें। आज नारी अत्याचार एवं नारी शोषण की जघन्य घटनायें हमें झकझोर कर रखी दी हैं। दिल्ली का बहुचर्चित 'दामिनी' काण्ड हो या हर गली-मोहल्ले का नारीकाण्ड, हमारे पुरूषत्व एवं परमार्थ को कोसता है। जिस समाज में बेटियाँ सुरक्षित नहीं उस समाज का पतन एवं विनाश सुनिश्चित है। हमारी नारियों के प्रति संवेदना हेतु दिया गया नारा ''पढ़ें बेटियाँ, बढ़ें बेटियाँ'' शत् प्रतिशत सफल हो, हमें ऐसी सोच विकसित करनी होगी तभी हम स्वयं को अलंकृत अनुभव कर पायेंगे-

'अष्टौ गुणाः पुरूषं दीपयन्ति,
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चा बहु भाषिता च,
दानं यथा शक्ति कृतज्ञता च।

प्रतिष्ठा एवं सम्मान मानव की अमूल्य थाती है जिसे किसी बाजार से नहीं खरीदा जा सकता। प्रतिष्ठा के लिए हम विवाद कर लेते हैं भले ही हमारे आचरण से दूसरे के सम्मान का अहित ही क्यों न हो रहा हो। पर ध्यान रहे ! हमारी प्रतिष्ठा जो स्वयं में एक अलौकिक रत्न है, संघर्ष एवं उत्रविवाद से नहीं अपितु कर्तव्य निर्वहन से प्राप्त होती है। अपना हित देखने के साथ-साथ अबोध छात्रों के सुनहरे भविष्य हेतु हम कृत संकल्पित भी हों। यही नीति है, यही न्याय है, यही धर्म है, यही कर्म है, यही जीवन है, यही मरण है।

समाज की दिशा एवं दशा तय करने वाले हे प्रतिष्ठित गुरुजन ! लक्ष्य के प्रति आपको बेहद् सजग रहने की आवश्यकता है। आपका आगाज़ हमें अंजाम तक अवश्य पहुँचायेगा क्योंकि मन से किया गया कार्य कभी व्यर्थ

नहीं जाता है। यदि हम सफलता से दूर हैं तो इसका अर्थ यह है कि सफलता हेतु वांछित प्रयास नहीं किया गया। मैं सम्पूर्ण शिक्षकों के शिष्ट मण्डल से यथोचित कर्तव्य, वाणी, आचरण एवं मर्यादा की आकांक्षा करता हूँ जिसकी मुझे बेहद् चाह है-

'निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे !
सब जाय अभी पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे !
कुछ हो न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को।''

-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

आगामी सत्र 2020-21 विद्यालय के गौरवशाली इतिहास का शताब्दी वर्ष के रूप में अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रतीक स्वरूप सदैव अमर रहेगा। शताब्दी वर्ष के वृहद समारोह के आयोजन की रूपरेखा सारस्वत खत्री पाठशाला द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं-शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज, एस.एस. खन्ना स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टैगोर पब्लिक स्कूल एवं नवीन शिशु वाटिका के संयुक्त प्रयास से तैयार की गई है जिसका आगाज सन् 2020 में बसन्त पंचमी के पावन पर्व पर सारस्वत खत्री पाठशाला के स्थापना दिवस के रूप में किया गया। प्रांगण को अलौकिक ढंग से सजाया गया। यह समारोह तीन दिन तक अपने अस्तित्व में रहा।

वर्तमान समय में प्रकृति के प्रकोप स्वरूप कुदरती कहर सम्पूर्ण धरा को अपनी चपेट में लेते हुए सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक नई चुनौती खड़ा कर दिया है। कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व में अपने पाँव पसारे। हमारा देश भारत इससे अछूता नहीं रहा। अभी तक हम इस बीमारी से दो-दो हाथ कर रहे हैं। आज इस वैश्विक महामारी ने मानव जीवन को ही बदल डाला है। इस महामारी के चलते विश्व अर्थव्यवस्था ही असंतुलित हो चुकी है। हमारे धैर्य, पराक्रम, संयम एवं नियम से यह दौर भी गुजर जायेगा और एक सुखद नवल प्रभात का शीघ्र ही दीदार होगा-

'दुःख की पिछली रजनी बीच।
विकसता सुख का नवल प्रभात।' - **जयशंकर प्रसाद**

विद्यालय के शताब्दी समारोह के आयोजन पर भी इस महामारी का प्रकोप जारी है। निकट भविष्य में हम अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुँचेंगे क्योंकि जिसका आगाज है, उसका अंजाम भी है।

नीयत कितनी ही अच्छी क्यों न हो पर दुनियाँ हमें हमारे दिखावे से जानती है और दिखावा कितना ही अच्छा क्यों न हो, ईश्वर हमें हमारी नीयत से पहचानता है। इस बात का गम नहीं कि परमात्मा हमारी दुआयें तुरन्त कुबूल क्यों नहीं करता। शुक्र है, वह परमपिता हमारे गुनाहों की सजा हमें फौरन नहीं देता। यह हमारी किस्मत ही है कि वह परवरदिगार हमारे गुनाहों की पर्दापोशी किया है वरना यदि हमारे गुनाह एक-दूसरे के दरम्यान पता चल जाते तो हम एक-दूसरे को दफन भी नहीं करते। यदि कोई हमारा दिल दुखाये तो हमें उदास नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह कुदरत का कानून है कि जिस दरख्त का फल मीठा होता है, लोग उसी पर ही पत्थर फेंकते हैं। रिश्ते कुदरती मौत नहीं मरते, उन्हें इंसान ही कत्ल करता है, कभी नफरत से तो कभी घृणा से। यह तो अपनी-अपनी समझ है कोई कोरा कागज पढ़लेता है और किसी को पूरी किताब भी समझ नहीं आती।

अन्त में उस अजेय, अविनाशी, अद्वितीय, अलौकिक एवं अपराजेय देव की मैं भूरि-भूरि वन्दना करता हूँ जिसके रहमो-करम से इस वसुन्धरा पर हमारा अस्तित्व कायम है और मुझे चन्द शब्दों के उद्बोधन की प्रेरणा प्राप्त हुई ....

*"I was naked, You clothed me,
I was hungry, You fed me,
I was disappointed, You helped me,
O my Lord ! I had nothing, everything you gave me."*

लाल चन्द्र पाठक
प्रधानाचार्य

पूर्व निवेदन

आज आपसे जुड़कर अत्यन्त सुखद अनुभूति हो रही है हृदय एवं मस्तिष्क ढ़ेर सारी अकथ बातों - प्रसंगों को लेकर आप सबके सम्मुख प्रस्तुत है। जीवन की वाटिका अत्यन्त विशाल है यह हमारे अनुभवों की प्रयोग शाला है साथ ही साथ यह एक निर्झर धारा भी है जिसमे निरन्तर कई सोपान आते एवं पीछे छूटते जाते हैं। कभी सफलता हमारा राजतिलक करती है तो कभी असफलता हमें तोड़ देने का प्रयास करती है। कभी हमारी बुलंद आवाज खो जाती है तो कभी हमारा मौन दूसरों को सुनायी पड़ जाता है।

जिन्दगी कभी - कभी गम की आभारी होती है।
एक खामोशी सौ शब्दों पर भारी होती है।।

हम मौन रखकर भी समाज को संदेश दे सकते हैं। हमारी वाणी हमारे आचरण के समक्ष अत्यन्त कमजोर है। हमारा आचरण समाज - काल - देश सबके समक्ष प्रतिबिम्बित होता है। आचरण के मजबूत हिमालय की शिला से आइये अपने, समाज एवं देश में संस्कारों की प्राण प्रतिष्ठा करें। छात्रों को अपनी सभी इन्द्रियों को सदैव प्रभाव शाली बनाकर रखना होगा। उन्हें ''डर के आगे जीत है'' के भाव से परिपूर्ण होना होगा।

थॉमस एडिसन ने कहा था :-

''हमारी सबसे बड़ी कमजोरी हार मान लेना है, सफल होने का सबसे निश्चित तरीका है हमेशा एक और बार प्रयास करना है।'' प्रयास द्वारा हम पीतल का उन्नयन कर उसे स्वर्ण बना सकते है हार एवं जीत के समक्ष सदैव एक प्रयास की कमी ही दिखाई पड़ती है। कई छात्र ऐसे होते है जो मेहनत तो करते हैं लेकिन फिर भी उन्हें सफलता नही मिलती है जिसकी वजह से वे निराश होकर मेहनत करना ही छोड़ देते हैं और अपनी किस्मत को कोसने लगते है बल्कि उन्हें कई ऐसें सफल लोगों से प्रेरणा लेनी चाहिए जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन भर प्रयास किया केवल एक लक्ष्य एवं सफलता हेतु। कई छात्र ऐसे भी होते हैं जो सफल तो होना चाहते हैं लेकिन इसके लिये प्रयास नहीं करते और अपना काफी समय गँवा देते हैं जिसके बाद एक पल ऐसा आता है जब उन्हें लगता है कि काश ! मैंने भी मेहनत की होती तो आज मै सफल अवश्य होता। छात्रों ! प्रयास मेहनत संकल्प माँगती हैं बस-

''जहाँ तुम हो वहीं से शुरूआत करो, जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसका उपयोग करो और वह मात्र करो जो तुम कर सकते हो।''

इसलिए यदि किसी लक्ष्य के विषय में सोचें तो उसे करने का प्रयास जरूर करें क्योंकि क्या पता एक और प्रयास आपकी सफलता छिपा कर बैठा हो। वक्त निकलने में टाइम नही लगता और फिर जिन्दगी में काश शब्द के सिवाय और कुछ नहीं बचता, साथ ही प्रयत्न नहीं करने से पूरी जिन्दगी भर अफसोस होता है।

कार्य आरम्भ तो करें - एक शुरूआत काफी होती है कभी - कभी बड़ी सफलता को प्राप्त करने हेतु। आगाज अच्छा होने पर हम आधी जंग तो पहले ही जीत लेते हैं

''जब तक किसी कार्य को आरम्भ नहीं किया जाता तब तक वह असंभव ही लगता है।''   - नेल्सन मण्डेला

आइये अच्छा आगाज करें, स्वंय के प्रति ईमानदार बनें और एक सच्चे दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े। तभी हम अपनी जिन्दगी में सफल हो सकते हैं और सफलता की नई ऊँचाइयों को हासिल कर सकते हैं, भगवान बुद्ध ने कहा था:-

''न कभी भूतकाल के बारे में सोचो और नही भविष्य की चिन्ता करो, अपने दिमाग को सिर्फ वर्तमान में लगाओ''

वीथिका का सम्पादन आप सबको जगाने का लक्ष्य है। भविष्य की हमारी थाती को सचेष्ट करने एवं जोश भरने का यह अभियान भी है। वीथिका के नये अंक की प्राण प्रतिष्ठा करने में अनेक मनीषियों, शिल्पकारों, शिक्षाविदों एवं विद्यालय को मूर्त रूप देने वाले आधुनिक भगीरथों का आशीर्वाद हमें शुभकामना संदेश के रूप में प्राप्त हुआ है। आस्था एवं विश्वास से हम निरन्तर इस पथ पर बढ़ते रहे हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन में अध्यक्ष एस. के.पी. सोसाइटी श्री राजीव खन्ना, सचिव श्री अमित खन्ना, अध्यक्ष प्रबन्ध समिति शिव चरणदास कन्हैया लाल इण्टर कालेज श्री वीरेन्द्र मोहिले जी का स्तुत्य सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। मा. न्यायमूर्ति टण्डन जी का दिशा निर्देशन एवं कर्तव्य बोध हम सबको सम्बल एवं विश्वास देता है। विद्यालय के यशस्वी प्रबन्धक श्री धीरज खन्ना जी निरन्तर दिशाबोध देते रहे, आपका हृदय की गहराइयों से आभार। मेरा आभार हमारे माननीय प्रधानाचार्य जी का भी है जिन्होंने प्रत्येक पल मुझे जागृत किया और शक्ति का संवहन किया। अन्त में मेरा आभार हमारे ज्ञानसिक्त शिक्षक बन्धु-भगिनी, श्रमशील लिपिक वर्ग, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारीगण तथा छात्रगण को भी है जिन्होने मुझे लक्ष्य तक पहुँचने में असीम सहयोग किया है।

अन्त में ज्ञान पिपासु पाठकों - छात्रों के सुझाव की असीम आशा के साथ आपसे विदा लेता हूँ और आपके हवाले करता हूँ वीथिका का नवीन संस्करण। अपने प्रेम एवं स्नेह से हमे कृतार्थ अवश्य कीजिएगा।

धर्मबीर सिंह
प्रधान सम्पादक : वीथिका

प्रगति आख्या
कम्प्यूटर विभाग

''शिक्षा ज्ञान और बुद्धि के रास्ते से गुजरने वाली एक अनंत यात्रा है ऐसी यात्रा से मानवता के विकास के नए दरवाजे खुलने लगते हैं जहाँ शत्रुता का कोई स्थान नहीं है इससे मानव का व्यक्तित्व, विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है सही शिक्षा से मानवीय गरिमा स्वाभिमान और विश्व बन्धुत्व में बढ़ोत्तरी होती है। ये गुण शिक्षा के आधार होते हैं। अतः हमें यह देखना है कि क्या वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से छात्रों में इन गुणों का विकास होता है।

हमें ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करने चाहिए जो विकसित भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी सम्बन्धी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो, शिक्षा प्रणाली में उद्यमशीलता के महत्व पर प्रकाश डालना चाहिए। जिससे कि वे रोजगार खोजने की बजाय खुद रोजगार पैदा करें। एक शिक्षा प्रणाली में ऐसी क्षमता होनी चाहिए जो छात्र को ज्ञान-प्राप्ति की तीव्र जिज्ञासा को शांत कर सके। एक उत्कृष्ट शिक्षा मॉडल समय की मांग है वह यह सुनिश्चित करें कि छात्र बड़े होकर राष्ट्र निर्माण में सहयता दें।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए सारस्वत खत्री पाठशाला ने सत्र 2000-2001 से कम्प्यूटर शिक्षा विद्यालय में आरम्भ की जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों में शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान व रोजगार परक शिक्षा प्रदान करना था।

शिव चरण दास कन्हैयालाल इंटर कालेज में कम्प्यूटर शिक्षा मात्र 5 कम्प्यूटर सेट से आरम्भ की थी जो कि वर्तमान में 50 से भी अधिक कम्प्यूटर सेट्स व नए उपकरणों से लैस वातानुकूलित प्रयोगशाला है जहाँ कक्षा 6 से लेकर कक्षा 12 तक सत्र 2013 से अंग्रेजी माध्यम के छात्र-छात्रायें हेतु प्रयोगात्मक कार्य करते हैं।

माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा अत्याधिक व सुसज्जित प्रयोगशाला होने के कारण प्रयागराज मंडल के प्रयोगात्मक परीक्षा 2020 हेतु केन्द्र भी बनाया गया। जिसमें प्रयागराज मंडल से सम्बन्धित विद्यालयों के छात्र-छात्रायें ने परीक्षा में सम्मिलित हुए।

कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को सारस्वत खत्री पाठशाला द्वारा मेधावी (कम्प्यूटर) छात्रों के प्रत्येक सत्र में छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है।

सीखने से सृजनशीलता आती है, सृजनशीलता सोचने की राह बनाती है, सोचने से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान व्यक्ति को महान बनाता है।

- डॉ0 अबुल कलाम

अंत में संस्था के प्रधानाचार्य, शिक्षक बन्धु व छात्र-छात्राओं से मिले अपार स्नेह के लिए। धन्यवाद

विश्वनाथ मिश्र
विभागाध्यक्ष

MY AIM IN LIFE

Life without aim is useless and pointless. Life is a great blessing of God. It should be spent on a purpose with certain aim. Otherwise, there will be no difference between the life of man and that of animals.

Life of olden times was simple. Man had to hunt for food, nothing more. But, now it is a different time. We new challenges to meet. We have new problems to solve. So, one should be ready for all these things. One face life and its problems with a plan. Without a plan, life would be difficult to lead.

I want to become a teacher. The question is why so. There are manyh other professions. One can be a do earning a lot of rupees daily. One can be an engineer, getting thousands of rupees as salary. One can be a keeper earning lots of profits. One can also be a trader, selling things and earning lot of profits. Why the teacher ?

Many people think that teachers are merely teachers with no high status in life.

I admit, teachers are not given proper status in our society. But, all the same, I like this profession. The teaching is the highest job to do. It is because teachers bring light of knowledge in the lives of the people. The take them out of ignorance. They teach them good values.

This is what I think about teaching profession. In my opinion, a poor literate man is better than an illiterance man. So, that is why I want to be a teacher. This is my aim in life.

''एक श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी बोली में पीछे लेकिन अपने कर्म में आगे रहता है।''

The Ever Evolving YOGA

In this era, we are experiencing many great shifts on our planet. And we are confornted by day-to-day challenges and global issues which make each of us to rise up to be our best selves.

But how can we live our potential and make our best contributions to our world when our fast-paced modern culture pulls us in so many directions at once ? And how do we make space for a deeper spiritual practice when over whelmed by other priorities, such as health, fitness, family, career and service to others ?

We look to the ancient wisdom of yoga-which is entering an exciting, new phase.

While the core of yoga's spiritual teaching has remained constant, its forms have changed dramatically in the past 150 years - demonstrated by thre major evolution shifts.

First, it was practiced mainly by male ascetics in India as a path for spiritual awakening where they often renounced possessions, family and work to live in full-time contemplation.

Next, it was adopted in the West-primarily by women-as a method for improving health and fitness.

And now a different and more beautiful expression of yoga is evolving - which is all about living your life as an expression of the Divine, and bringing your practice into your family work, community and beyond.

It's become an integral way of being that can elevate all area of your life, and can help you become a catalyst for positive shift in our world.

We are multi-dimensional beings, and yoga is evolving into practices that touch even aspect of your lives-from our intimate relationships to our activism. It is transitioning from being a practice on the may to a lifestyle we live 27/7.

And the results of this are stunning : better health and better relationships, more clerity thoughts and more joyful creativity, more inner peace and more loving acts of service.

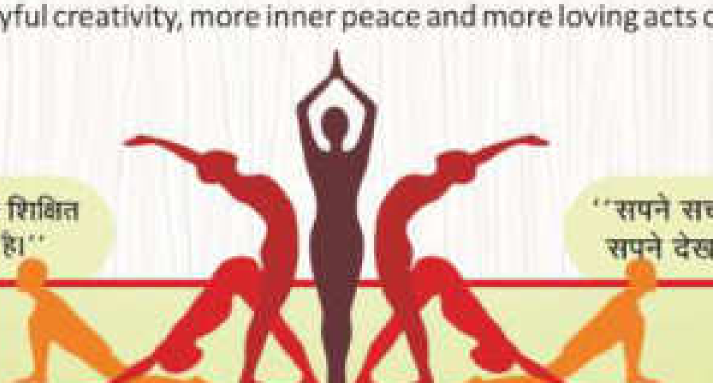

''शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है, एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है।''

''सपने सच हो इसके लिए सपने देखने जरूरी है।''

विज्ञान परिषद्
वार्षिक आख्या-2019-20

विज्ञान मानव जीवन के लिए एक महान वरदान है। मानव के इतिहास में उसके जीवन के लिए विज्ञान के उदय से बेहतर कोई दूसरी घटना घटित नहीं हुई। जब विज्ञान का उदय हुआ उस समय विश्व अज्ञानता, दुःखों और विपत्तियों से घिरा हुआ था। विज्ञान ने मनुष्य में दुःखों से छुटकारा दिलाने, उसकी अज्ञानता को दूर करने भगाने व उसकी मुश्किलों को कम करने में सार्थक भूमिका निभाई है।

विज्ञान मानव का निष्ठावान सेवक है चाहे व घर, विद्यालय, कार्यालय या कारखाने हो। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान के बिना हम अधूरे हैं।

यदि मानव विज्ञान की प्रयोग अपनी सुख सुविधा के स्थान पर विनाशकारी कार्यों के लिए करने लगे तो उसके भयंकर परिणाम भुगतने पड़ते हैं और विज्ञान स्वयं भस्मासुर की तरह व्यवहार करता है। इसका ज्वलंत उदाहरण चीन के वुहान शहर से निकले नोबेल कोरोना वाइरस (कोविड-19) ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। इसके संक्रमण से लाखों लोग अपनी जान गवाँ चुके है। यद्यपि कई देशों में इसकी वैक्सीन व दवाओं पर अनुसंधान जारी है परन्तु इसका उपयोग में आना अभी शेष है।

विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विज्ञान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए सत्र 2019-20 में शहर दक्षिणी सम्भाग की 27वीं बाल विज्ञान कॉंग्रेस नोडल स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय में हुआ जिसमें जूनियर तथा सीनियर वर्ग में 54 बाल वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया। विद्यालय के सीनियर वर्ग में कार्तिकेय अग्रवाल, रितेश कुमार कुशवाहा, राहुल कुमार, मो0 अनस, शिवांग पाण्डेय व अंकित सिंह जबकि जूनियर वर्ग में अंकित पटेल व रवि अग्रहरि के शोध पत्रों का चयन जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ। अंकित पटेल व रवि अग्रहरि को अगले चरण प्री-स्टेट के लिए चुना गया।

इस क्रम में शंभूनाथ इंजीनियर कॉलेज में अमर उजाला फाउण्डेशन द्वारा आयोजित विषय ''विज्ञान वरदान है कि अभिशाप'' पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में कार्तिकेय अग्रवाल, अंकित पटेल व शिवांग पाण्डेय ने प्रतिभाग करके विद्यालय को गौरवान्वित किया।

विद्यालय स्तर पर भी छात्रों में विज्ञान की अभिरूचि उत्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित कराकर उनको भविष्य में योग्य व अनुशासित नागरिक बनाना हमारा एकमात्र संकल्प है।

कमलाकांत शुक्ल
प्रवक्ता : भौतिकी विज्ञान
संयोजक : विज्ञान परिषद्

वर्ष 2019-20 में खेलकूद में विद्यालय की उपलब्धियाँ

क्रिकेट :

क्रिकेट में विद्यालय द्वारा आयोजित खेल उपलब्धियाँ 2019-20 में वीनू मांकड एवं सी. के. नायडू क्रिकेट प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यालय के 7 छात्रों ने प्रतिभाग किया जिसमें कक्षा 9 के छात्र यशपाल का चयन अण्डर-17 टीम में स्पिन गेंदबाज के रूप में किया गया। तत्पश्चात् मण्डली प्रतियोगिता में इलाहाबाद जनपद की टीम घोषित हुई। योगदान में यशपाल का चयन प्रदेशी टीम के लिए किया गया प्रतियोगिता आगरा में आयोजित की गई इस प्रतियोगिता में इलाहाबाद मण्डल विजय रहा। तदुपरान्त यशपाल का चयन अण्डर-17 क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए राष्ट्रीय स्तर पर किया गया। यह प्रतियोगिता विशाखापट्टनम में आयोजित की गई। जहाँ उत्तर प्रदेश की टीम ने स्वर्ण पदक हासिल किया। विद्यालय के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है।

बैडमिंटन :

सितम्बर माह में विद्यालय द्वारा जनपद एवं मण्डल स्तर की बैडमिंटन बालक एवं बालिका चयन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह आयोजन अभिताभ बच्चन स्पोर्ट्स कम्पलेक्स में किया गया। जनपद स्तर की प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में सह जिला विद्यालय निरीक्षक श्री शुक्ला जी ने अपना अमूल्य समय प्रदान करके बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया। इस अवसर पर प्रतियोगिता के संयोजक श्री लालचन्द पाठक जी प्रधानाचार्य शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज भी उपस्थित थे। मण्डली प्रतियोगिता में इलाहाबाद जनपद की टीम प्रथम स्थान पर रही।

इस प्रतियोगिता में विद्यालय के एक छात्र मोहसिन खान का चयन जनपदीय टीम के लिए किया गया।

दसवीं आनन्द प्रकाश वर्मा स्मारक बैडमिंटन प्रतियोगिता :

इस वर्ष इस प्रतियोगिता का आयोजन दिसम्बर को विद्यालय परिसर में किया गया।

प्रतियोगिता में जनपद के 22 विद्यालयों ने सीनियर एवं जूनियर वर्ग में प्रतिभाग किया यह प्रतियोगिता बालक एवं बालिका दोनों के लिए आयोजित की जाती है।

जूनियर बालिका वर्ग में मेरी वर्नामेकर की छात्रायें प्रथम स्थान पर, संत एंथोनी गर्ल्स की छात्रायें द्वितीय स्थान पर तथा टैगोर पब्लिक स्कूल की छात्रायें तृतीय स्थान पर रही। सीनियर बालिका वर्ग में मेरी वर्नामेकर प्रथम स्थान तथा आर्य कन्या द्वितीय स्थान पर थी। इसी क्रम में जूनियर बालक वर्ग में प्रथम स्थान पर पण्डित हनुमत दत्त त्रिपाठी के छात्र रहे तथा द्वितीय स्थान पर के.पी. इण्टर कॉलेज के छात्र थे। शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज के छात्र तृतीय स्थान पर थे।

सीनियर बालक वर्ग में पंडित हनुमान त्रिपाठी के छात्र प्रथम स्थान पर तथा शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज के छात्र द्वितीय स्थान पर रहे। तृतीय स्थान महाऋषि बाल्मीकि के छात्रों ने प्राप्त किया।

एथेलेटिक्स :

इस वर्ष नगर दक्षिण क्षेत्रीय एथलेटिक्स रैली का आयोजन डी.ए.वी. के क्रीड़ा प्रांगण में किया गया। इस प्रतियोगिता में सब-जूनियर, जूनियर एवं सीनियर वर्ग के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

इस प्रतियोगिता में सीनियर एवं जूनियर वर्ग में प्रतिभाग करने हेतु विद्यालय के 28 छात्रों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में अलग-अलग प्रतिस्पर्धा में भाग लेते हुए विद्यालय के छात्रों ने 36 पदक हासिल किया। इसमें 13 स्वर्ण पदक, 11 रजत पदक, 12 कांस्य पदक शामिल है।

प्रतियोगिता का आरम्भ विद्यालय के सचिव श्री अमित खन्ना ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबन्धक एवं सोसाइटी के अन्य सदस्यगण तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य उपस्थित थे। इस प्रतियोगिता में सीनियर बालक वर्ग में इस वर्ष शिवा भोला चैम्पियन घोषित किये गये। शिव भोला ने 100 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान, 400 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान, ऊँची कूद में प्रथम स्थान एवं 1500 मीटर की दौड़ में स्थान प्राप्त करके चैम्पियन ट्राफी पर कब्जा किया।

मेल्विन लाटियस
प्रवक्ता : शारीरिक शिक्षा
शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज

अपना भारत महान क्यों ?

प्रवीन्द्र नारायण त्रिपाठी, प्रवक्ता-इतिहास

यदि हम अपने देश का इतिहास और पौराणिक कथायें देखें तो उनमें ऐसे बहुत से आविष्कार, यान, सूत्र, सारणी आदि का प्रयोग और उनका ज्ञान दिया गया है जिसे सुन और पढ़कर आधुनिक विज्ञान भी दाँतों तले अंगुलियाँ दबा लेता है तथा पौराणिक कथाओं में वर्णित ऋषि-मुनि विज्ञान की खोज से भी पहले उन चमत्कारों को दर्शा चुके थे, जिन्हें विज्ञान अपना आविष्कार मानता है। अन्तर सिर्फ इतना है कि पहले इन्हें चमत्कारों की श्रेणी में रखा जाता था और अब यह वैज्ञानिक करामात बन गये हैं। परन्तु आज भारत की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि कुछ कुंठित बुद्धिजीवी इन्हें मात्र कहानी मानते हैं। यह मानसिक गुलाम बुद्धिजीवी तो मानसिक रूप से इनके गुलाम बन चुके हैं कि बिना सोचे-समझे और अध्ययन किये ही इन सबको काल्पनिक करार देते हैं।

सज्जनों ! महान वैज्ञानिक पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कई बार कहा है कि उन्हें प्राचीन भारतीय ग्रन्थों से मिसाइल बनाने की प्रेरणा मिलती थी। आइंस्टीन ने भी कई बार प्राचीन भारतीय ग्रंथों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। अभी कुछ समय पहले ही 'हिस्ट्री चैनल' ने यह रहस्योद्घाटन किया था कि हिटलर प्राचीन भारतीय ग्रन्थों पर अध्ययन कर टाईम मशीन बनाना चाहता था।

कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं - दिल्ली में कुतुबमीनार के पास ही सैंकड़ों वर्षों से अशोक की लाट शान से खड़ी है। आज तक इस पर जंग भी नहीं लगा है। कई देशों के वैज्ञानिक इस पर अनेक बार अध्ययन कर चुके हैं लेकिन आज तक कोई इसका रहस्य नहीं जान सका है। राजा विक्रमादित्य के काल में ब्याड़ी नामक व्यक्ति की कहानी तो आपने सुनी ही होगी जिसने अथक प्रयास से सोना बनाने की कला में महारत हासिल कर ली थी। सिद्ध नागार्जुन के बारे में कौन नहीं जानता, कहा जाता है कि इनके बहुत से ग्रंथ चुराकर विदेश पहुँचा दिये गये, जहाँ इन पर गुप्त रूप से अध्ययन जारी है।

आजकल सभी देशों में परमाणु परीक्षण की होड़ लगी है। आधुनिक वैज्ञानिक इसे अपनी खोज मानते हैं लेकिन महाभारत के युद्ध में इनके प्रयोग की बात उल्लिखित है। आधुनिक विज्ञान वैज्ञानिकी का जनक अपने को मानता है जबकि कई प्राचीन भारतीय ग्रंथों में इसका विस्तारपूर्वक उल्लेख है। इनमें सबसे प्रसिद्ध पुष्पक विमान जिस पर बैठकर भगवान राम सीता सहित अयोध्या पधारे थे। वैज्ञानिकी से जुड़े कई प्रसिद्ध ग्रंथ भी लिखे गये थे जिसमें सबसे प्रसिद्ध है भारद्वाज ऋषि द्वारा रचित 'यंत्र वर्चस्व'।

स्टीफन हाकिंग का मशहूर सिद्धांत जिसमें उन्होंने यह बताया है कि धरती से बाहर अंतरिक्ष में अलग-अलग स्थानों पर समय की गति भी भिन्न-भिन्न होती है। यही बात हमारे पुराणों ने हजारों साल पहले ही बता दिया था कि अलग-अलग ग्रहों और लोकों में समय की गति भी अलग-अलग होती है। ब्रह्म पुराण और हरिवंश पुराण में इसका विस्तृत वर्णन है।

भ्रूण स्थानान्तरण या आई.वी.एफ. को आज के वैज्ञानिक अपना चमत्कार मानते हैं लेकिन यह सबसे पहले कृष्ण जन्म के समय हुआ था जब कृष्ण जन्म से पहले ही भगवान विष्णु के निर्देशानुसार योग माया द्वारा देवकी के गर्भ से इसे रोहिणी के गर्भ में स्थानान्तरित कर दिया गया था। न्यूटन को गुरूत्वाकर्षण सिद्धांत का जनक कहा जाता है जबकि प्रसिद्ध भारतीय ग्रन्थ भास्काराचार्य द्वारा रचित 'लीलावती' में आकर्षण के सिद्धांत के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है।

आर्गन ट्रांसप्लान्ट आजकल आम-बात है लेकिन इसका पहला प्रयोग गणेशजी के समय हुआ था जब हाथी का सिर काटकर गणेशजी के धड़ से जोड़ दिया गया था।

17वीं सदी में जिओ वानी और रिचर्ड ने सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी को नापा था और बताया कि यह दूरी 140 मिलियन किलोमीटर है लेकिन यह और पहले ही हनुमान चालीसा में वर्णित है - जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।' इसके अनुसार सूर्य पृथ्वी से जुग सहस्त्र योजन की दूरी पर स्थित है। 1 जुग अर्थात् 12 हजार, सहस्त्र अर्थात् 1000 और योजन 8 मील (1 मील त्र 1.6 किलोमीटर) 12000 ग 1000 ग 8 मील का हिसाब 153600000 किमी0 लगभग उसी संख्या को दर्शाता है जो वैज्ञानिकों द्वारा मापा गया था।

इसीलिए कहते हैं - **हमारा भारत महान।**

वाणिज्य
वर्तमान समय की जरूरत

शैक्षिक सत्र 2019-20 में छात्रों के द्वारा किए गये अभूतपूर्व प्रयास से इण्टरमीडिएट स्तर पर वाणिज्य वर्ग का परीक्षाफल सर्वोत्तम रहा जिसके लिए सभी छात्रों को बधाई। आशा करता हूँ कि जो परिणाम आने बाकी हैं वे भी अच्छे ही होंगे। छात्रों में वाणिज्य शिक्षा के प्रति रूचि जाग्रत करने के लिए उन्हें इस शिक्षा के अन्तर्गत भविष्य में आने वाले सुअवसरों के बारे में प्रेरित किया गया। छात्रों को प्रारम्भ से ही वाणिज्य शिक्षा की छोटी-छोटी बातें जाननी चाहिए ताकि वे भविष्य में व्यावहारिक जीवन में उनका लाभ उठा सकें। आज प्रबन्धन विपणन, वित्त, बैंकिंग, बीमा, कार्पोरेट, एकाउन्टिंग व व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में वाणिज्य को आवश्यकता है। जब छात्र अपने कैरियर में रूचि के अनुसार क्षेत्र का चयन करता है तो उसके विचार में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। वह उसमें उत्पन्न अवसरों को खोजना है और अपनी पसन्द का भी ध्यान रखता है। शिक्षा जगत में उचित मार्ग-दर्शन का विशेष महत्व होता है। छात्र सही मार्ग का चयन करने के लिए शिक्षक, अभिभावक व अपने सहपाठियों की सहायता प्राप्त करते हैं। विद्यालय में अत्याधुनिक रूप से बने पुस्तकालय के अन्तर्गत छात्रों हेतु अनेक उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनसे छात्र अपनी जिज्ञासाओं की पूर्ति कर सकते हैं। छात्रों के उत्साहवर्द्धन हेतु विद्यालय की प्रबन्ध सीमित द्वारा अनेक प्रकार की छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती है जिससे छात्रों का मनोबल बढ़ता है। इस वर्ष छात्रों को महामारी के दौर में घर पर रहकर ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा शिक्षित किया जा रहा है। मैं प्रबन्ध समिति का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ कि उनके द्वारा छात्रों के कल्याण हेतु हर संभव प्रयास किये जाते हैं।

अभय सेठ
प्रवक्ता : वाणिज्य

Independence Day
Celebration

"Nation is our
True Guardian
&
The Sky of
Ozone."

Medha Patekar
"Renowned Social Reformer

TEACHER'S DAY

Celebration

Annual Sports

II
I
III

वृक्षारोपण
कार्यक्रम

कुंभ दर्शन

संघर्ष ही जीवन है

प्रवीन्द्र नारायण त्रिपाठी, प्रवक्ता-इतिहास

जापानियों को ताजी मछली खाना बहुत पसन्द है। ताजा मछली पकड़ने और फटाफट बेचने में वहाँ के मछुवारे डटे रहते हैं। लेकिन एक समस्या थी कि जापान के समुद्री तटों पर मछलियाँ बहुत कम मिलती थी। ढेर सारी मछलियाँ पकड़ने के लिए दूर समुद्र में जाना पड़ता था जिससे लौटने में कभी-कभी दो-तीन दिन लग जाते थे इससे मछलियाँ ताजी नहीं रह जाती थी और खाने वाले समझ जाते थे कि मछली ताजी नहीं है, इससे मछलियाँ कम बिकने लगी।

इसका समाधान मछुवारों ने नावों में फ्रीजर लगाकर किया। लेकिन जापानी लोग ताजी और जमी हुई मछली का अन्तर पकड़ लेते थे। मछुवारों ने फिर यह समाधान निकाला कि कि नावों में ही छोटे वाटर टैंक बना दिये जायें जिसमें वे ढेर सारी पकड़ी मछलियाँ भर देते थे। मछलियाँ पहले बहुत संघर्ष करती थी फिर शांत हो जाती थी क्योंकि टैंक में बहुत जगह नहीं होती थी। मछलियाँ ज्यादा तैर नहीं पाती थी। लेकिन वे मरती भी नहीं थी। कुछ दिनों में जपानी इसे भी नापसन्द करने लगे क्योंकि इन सुस्त और थकी हुई मछलियों का स्वाद ताजी मछलियों जैसा नहीं था।

अंत में मछुवारों ने इसका भी समाधान खोज ही निकाला। मछुवारों ने उसी वाटर टैंक में एक छोटी शार्क मछली रखना शुरू कर दिया। शार्क कुछ मछलियों को खा जाती थी लेकिन फिर भी कुछ मछलियाँ बच जाती थी। ये बची हुई मछलियाँ जिन्दा और ताजी बनी रहती थी क्योंकि शार्क से बचने के लिए वे निरन्तर संघर्ष करती रहती थी।

जीवन की समस्यायें भी इन शार्क मछलियों जैसी ही हैं जो हमें बेहतर करने में काम आती हैं। हर काम शुरू में मुश्किल होता है पर लगातार कठिन परिश्रम से एक दिन वह हमारे लिए आसान भी बन जाता है।

धन्यवाद

योगा दिवस

इस कहानी से मैं सबके कर्तव्य को बताना चाहता हूँ।

कर्म ही पूजा है

एक बार एक युवक ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्वामी जी के आश्रम में गया। उसने स्वामी जी से सत्संग में भाग लेने की अनुमति मांगी। उन्होंने दे दी। स्वामी जी ने अपने प्रवचन में खेती-किसानी से जुड़ी काम की बातें पर चर्चा की। जब प्रवचन पूरा हो गया, तो उस युवक ने स्वामी जी के एक शिष्य से कहा, "यह तो बड़ी अनोखी बात है। मैं तो यहाँ इस उम्मीद से आया था कि मुझे आत्म-ज्ञान और पाप-पुण्य के बारे में ज्ञानवर्धक प्रवचन सुनने को मिलेगा। लेकिन इन्होंने तो टमाटर उगाने, सिंचाई करने जैसी बातों का जिक्र किया, जबकी अन्य गुरू तो यह कहते है कि हमें सदैव भगवान की भक्ति और आराधना करनी चाहिए। यह तो कोई नहीं कहता कि हमें टमाटर उगाना चाहिए।" युवक की बात सुनकर शिष्य ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "हम यह नहीं मानते जो आप मानते हो। हम यह मानते है कि भगवान ने अपने हिस्से की सभी जिम्मेदारियाँ बहुत अच्छी निभा दी है और अब यह हमारे ऊपर है कि हम उसके काम को आगे बढ़ायें।" अर्थात् अपने कर्तव्य को अच्छी तरह से निभाना ही सच्ची ईश्वर भक्ति है। हमें झूठे आडम्बरों से दूर रहना चाहिए और अपने काम पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

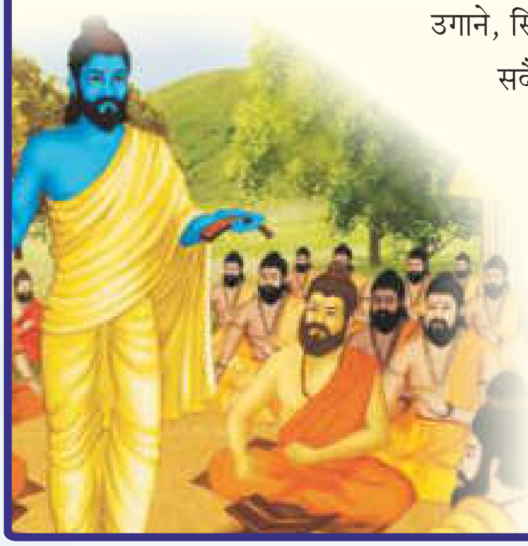

अविनाश कुशवाहा, कक्षा-11-स

माँ

एक गाँव में 10 साल का लड़का अपनी माँ के साथ रहता था। माँ ने सोचा कल मेरा बेटा मेले में जाएगा उसके पास 10 रूपये तो हो। ये सोचकर माँ खेतों में काम करके शाम तक पैसे ले आई। बेटा स्कूल से आकर बोला माँ, खाना खाकर जल्दी सो जाता हूँ कल मेले में जाना है। सुबह माँ से बोला मैं नहाने जाता हूँ नाश्ता तैयार रखना, माँ ने रोटी बनाई, दूध अभी चूल्हे पर था। माँ ने देखा बर्तन पकड़ने के लिए कुछ नहीं। उसने गर्म पतीला हाथ से उठा लिया। माँ का हाथ जल गया। बेटे ने गर्दन झुकाकर दूध रोटी खाई और मेले में चला गया। शाम को घर आया तो माँ ने पूछा मेले में क्या देखा, 10 रूपये में कुछ खाया कि नहीं, कुछ खरीदा भी। बेटा बोला, माँ आँखे बंद कर तेरे लिए कुछ लाया हूँ। माँ ने आँखे बंद की, तो बेटे ने उसके हाथ में गर्म बर्तन उठाने के लिए लाई सढ़सी रखी दी और बोला अब माँ तेरे हाथ नहीं जलेंगे। माँ की आँखों में खुशी के आँसू थे।

सच है ..... सब मिल जाता है पर माँ दोबारा नहीं मिलती।

सत्यम साहू, कक्षा-7

ज्ञान में निवेश सबसे अच्छा ब्याज देता है।

हिन्दी की अमर कहानी

हिन्दी की अपनी अमर कहानी है।
यह हिन्द देश की निशानी है।
हिन्दी पर गर्व करो हिन्दुस्तानियों,
इसके साथ जुड़ी अपनी भी कहानी है।
हिन्दी बोलो मत शर्म करो,
अपनी हिन्दी पे गर्व करो।
इससे उन्नत विकास की आशा है
यह हम सबकी मातृभाषा है।
जिस अंग्रेजी का शौक है हमें,
वह लालच देकर जानवर बनाती।
अपनी प्यारी हिन्दी तो,
अज्ञानी को भी ज्ञान सिखाती।
अपनी हिन्दी सबसे प्यारी
सबसे सुन्दर सबसे न्यारी,
हिन्दी का तुम सम्मान करो,
मत इसका तुम अपमान करो,
यह हमारे महापुरुषों की वाणी है,
हिन्दी की अपनी अमर कहानी है।

प्रभाकर सिंह, कक्षा-12-ए

वह मनहूस रात

खुशी से नम हो गई आँखें
बुरी करनी को मिला करारा जवाब,
खबर कुछ ऐसी आई आज सुबह
कि शिकारी खुद हो गये शिकार।
उस मनहूस रात के साए में
किया था जहाँ पाप तुमने
देखो नियति के भी खेल निराले
उसी जगह देखा तुम्हारा अंत सबने।
लाओ कोई कानून ऐसा
करो कुछ ऐसा उपाय,
रूह काँप जाए उस दरिंदे की
जिसके मन में भी यह ख्याल आए।
कोशिश कर एक ऐसा समाज बनाएं
जिसमें कोई भी बेटी न घबराये,
दुआ है, जब भी सुबह अखबार खोलूँ
कभी ऐसी की खबर न आए,
कभी ऐसी की खबर न आए।।

शिवाँग पाण्डेय, कक्षा-11-स

घन

हे घन ! मेघ पयोधर जलधर
सूना है क्यों तुझ बिन अम्बर
खाली है सागर सरिता सर
इन पर भी तो दयादृष्टि कर
हे इन्द्र देव ! घन से अम्बर भर
एक बार जोरों की वर्षा कर
धुल जाए धरती का आँचल
भर जाए जल से सरिता सर।।

प्रिंस चौरसिया, कक्षा-6

वृक्ष कटा, जीवन मिटा

धरती पर हरियाली होगी
जीवन में खुशहाली होगी,
प्राण वायु परिपूर्ण मिलेगी
नई चेतना तब फैलेगी,
यह सब को बतलाना है
धरती पर पेड़ लगाना है।
वन्य जीव है वन के सहारे।
काटे नहीं प्रिय इन्हें संवारें।
वन्य जीव से वन की गरिमा।।

नमन वर्मा, कक्षा-5

''हम जितना अध्ययन करते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता है।''

संसार के महापुरूष

महर्षि वेदव्यास, श्री राम, श्री कृष्ण, महावीर, महात्मा बुद्ध, महात्मा ईसा, हज़रत मोहम्मद साहब, कबीर, गुरूनानक, स्वामी विवेकानन्द, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर इत्यादि हजारों महापुरूषों ने समय-समय पर अंधविश्वास तथा वाह्य आडम्बर मिटाने का प्रयास किया है और सत्य का संदेश दिया है। सत्य सिर्फ ईश्वर है। सद्गुरू से ईश्वर का ज्ञान (दर्शन) होने पर जीव को ईश्वर पर विश्वास हो जाता है। कहा भी है -

बिना देखे मन मोद न माने, बिन मन माने प्यार नहीं।
प्यार बिना नहीं भक्ति भाव, बिन भक्ति बेड़ा पार नहीं।।
गुरू दिखावे, गुरू मनावें, गुरू ही प्यार सिखाता है।
गुरू बिन भक्ति निराधार, जो करता है पछताता है।।

यही बात तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है कि-

''जाने बिन न होई प्रतीती, बिन परतीती होइ नहीं प्रीती,

बिना प्रीती नही भगति दृढ़ाई, सभी ने ज्ञान के पश्चात् ही भक्ति की स्थिति स्वीकार की है। श्रीकृष्ण जी गीता में कह रहे हैं कि -

ज्ञानी परम विशेषा। भक्ति करे नहीं स्वारथ-लेवा।
ज्ञानी भक्त विशेष हमारा। मैं उसको वह मुझको प्यारा।

कबीर दास जी कर रहे हैं कि -

ऐसा साजन खोजिए, हरि से जोड़े जाये।
जो नर हरि से जोड़ दे, सो ही सद्गुरू होय।
बिनु ज्ञान नहीं यह राम मिले तुम चाहे उपाय हजार करो।
ज्ञान मिले गुरू के मुख से वर गूँथन की सब साख भरो।

हमारे चारों तरफ वायुमण्ड में सर्वत्र संगीत भरा पड़ा है, पर सुन वही सकता है जिसके पास अपना ठीक रेडियो सेट हो, जिस प्रकार हमारे चारों तरफ सर्वत्र आकाश में चित्र तैर रहे है, पर देख वहीं सकता है जिसके पास ठीक टी.वी. है, इसी प्रकार कण-कण में भगवान तो सब जगह सर्वव्यापी है, परन्तु देख वहीं सकता है जिसके पास गुरू का प्रदान की हुई दिव्य दृष्टि है। इसी तरह जिसके पास गुरू-प्रदत्त दिव्य चक्षु हैं, उसे सर्वत्र कण-कण में ईश्वर ही ईश्वर है।

1. **मैं नहीं तो कुछ न होगा सोचना नादानी है।**
सारे सिलसिले हैं मुझसे ये कहना बेमानी है।
झूठी शान दिखाता घोड़े अक्ल के तू दौड़ाता है।

कितनों को कुचलकर बन्दे आगे बढ़ता जाता है।
कहाँ गये वो तुझसे पहले जो घोड़े दौड़ाते थे।
ऊँचे-ऊँचे महल थे जिनके सब पर हुक्म चलाते थे।
महल वो सारे बने खण्डर वहाँ न दीपक बाती अब।
ना ही सवार होने वाले वहाँ न घोड़े हाथी अब।
खास में जाकर मिले वो सारे तूने भी मिल जाना है।
छोड़ इसे जाना है सबने जग ये मुसाफिरखाना है।
ऐ मिट्टी के पुतले इतना क्यों करता अभियान तू।
इस दुनिया में दो दिन का मेहमान तू।

2. सन्त जनों की भक्त जनों की बात जब भी आती है।
सवाल क्यों जाति का दुनिया बार-बार उठाती है।
विद्यार्थी की जान न कोई न शिक्षक की जात कोई।
एक पढ़ाता दूजा पढ़ता और नहीं है बात कोई।
उसकी कोई जात न होती बन्द है बीमार जो।
न ही उसकी जात है कोई करता है उपचार जो।
ज्ञान जन की जात न होती केवल होता ज्ञान है।
शिक्षित जो करता गुरू, वही पुरूष होता महान है।

3. न मन्दिर बुरा है न मस्जिद बुरी है।
बुरा खोजिए अपनी नियत मिलेगी।
किसी भी जगह का न मोहताज रब है।
हकीकत तो हर जा हकीकत मिलेगी।
ए हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई।
सभी एक मालिक के प्यारे दुलारे।
करे प्यार सबसे खुदा खुश रहेगा।
जो नफरत करेंगे तो नफरत मिलेगी।
है दिल में काशी, है दिन में काबा
खुदा, गॉड, भगवान दिन में ही रहता।
मगर अपनी नजरे नहीं देख सकती।
जब तक न मुर्शद की नजरें मिलेगी।।

धर्मबीर प्रसाद
प्रवक्ता : नागरिक शास्त्र

शिक्षक का उपकार

आए थे इस बगिया में हम कली बनकर
सींचा तुमने ऐसे कि बन गये हम फूल खिलकर
कभी हम जो बहे गलत रास्ते पर
तुमने हमें रोका बाँध बनकर
हम थे उगते हुए सूरज, आता नहीं था चमकना,
तुमने हमें सिखाया चमकना क्षितिज पर थे।
अंजन हम दुनिया से अब तक
तुमने हमें सिखाया चलना जीवन पथ पर
चल पड़े है कुछ बनने को मंजिल पर
आशा है, रहे यह हस्त सदा हमारे सिर पर
जन्म दिया भले ही माता-पिता ने
मिला है पर ज्ञान तुम्हीं से
रखना याद सदा है अनुजों
चलना है पर सदा इन्हीं के पद चिन्हों पर।

अमन साहू, कक्षा-9-ए

मातृभाषा हिन्दी

हिन्दी तेरे दर्द की किसे कहाँ परवाह
इक अंग्रेजी साल में, इक हिन्दी सप्ताह।
धड़कन में इंग्लैण्ड है। मुँह में हिन्दुस्तान।
ऐसे में हो किस तरह से, हिन्दी का उत्थान।

प्रभाकर सिंह, कक्षा-12-ए

स्वार्थी मनुष्य

जब-जब स्वार्थ रहा
जहाँ बुलाया वही मिल लिये
मैं जब बिस्तर में पड़ा था
तब क्यों नहीं आकर मिल लिये
नज़र से देखकर भी
मुँह फेर कर चल दिये
अरे ! कुछ धन न माँगता
बस हाल तो पूछ लेते
थोड़ी-सी मानवता के लिए
सिनेमा में हजारों खर्चा कर
मौज-मस्ती से चल दिये
उधर भूखे-प्यासे को
मरना पड़ा भोजन के लिए
हजारों का तेल भरवाकर
मोटरगाड़ी से चल दिये।
दो रूपये गरीबों को देने में
हाय-हाय कर दिये
जिधर देखा धन बस
उधर ही भाग रहे
अपने न रहे अपने
बस पराये भी तो एक औजार रे
धन की माया में मनुष्य
तुम इतना क्यों नाच रहे
एक दिन तेरे साथ कुछ
भी साथ नही जाना है रे
स्वार्थ में मनुष्य तू क्यों जीवन ताप रहे।
स्वार्थ के लिए मनुष्य तू
क्यों जीवन ताप रहा।
स्वार्थ के लिए अपनों का
ही गला काट रहा
स्वार्थी मनुष्य छोड़ दे स्वार्थ के डोरो को
वरना ये खत्म कर देगा सारे प्रेम के डोरो को
स्वार्थ का मोह त्यागकर
अब बस यही करना होगा।
सबका कल्याण हो सभी सु:खी हो
बस कुछ ऐसा करना होगा।

हार्दिक केसरी, कक्षा-12-डी (कामर्स)

''गरीब वह शिष्य होता है जो अपने गुरू से आगे नहीं बढ़ता।''

योग का महत्व

योग के बारे में महर्षि पतंजलि ने सर्वप्रथम बताया था। योग से हमें कई तरह के लाभ होते हैं। रोगों को भगाने के लिए सबसे सरल तरीका योग है।योग से हमारा वजन कम होता है, शरीर मजबूत और लचीला होता है। त्वचा सुन्दर और चमकदार होती है, मन शांत होता है, और ऊर्जा में वृद्धि होती है। योग हमें अच्छा स्वास्थ्य देता है। योग हमारी मानसिक स्थिति को ठीक करता है। लोग योग किसी भी समय, कभी भी करते है, पर हमें योग सुबह के समय और रोज करना चाहिए। लोग अभी भी यह प्रश्न करते हैं कि योग क्या है ? योग का मतलब आत्मा का परमात्मा से मिलना है। योग एक दवा है जिससे आपको लाभ होगा। लोग आज योग को उतना महत्व नहीं देते। परन्तु योग हमारे लिए बहुत लाभदायक होता है। दवा से बेहतर योग होता है। योग हमारे शरीर के हर एक अंग को ठीक करता है। इसीलिए हमें प्रण लेना चाहिए कि हम स्वस्थ रहेंगे और दुनिया को स्वस्थ बनायेंगे।

प्रशांत गौड़, कक्षा-8

प्रयागराज कुम्भ मेला

प्रयाग कुम्भ मेला है बड़ा अलबेला
देखने आया हर जनवासी
चाहे हो विदेशी या हो भारतवासी।
इस मेले में जाति-धर्म का नहीं है कोई खेल,
प्रयाग कुम्भ मेला है बड़ा अलबेला
अलग-अलग जाति के लोग यहाँ आते हैं,
आकर यहाँ संगम के पवित्र जल जैसे
आपस में घुल-मिल जाते है।
अलग-अलग विचार सभी के,
अलग-अलग है भाषा,
पर प्रयाग कुम्भ में आकर दिखती
धर्म और प्रेम की नई परिभाषा
इसीलिए प्रयाग कुम्भ मेला है, बड़ा अलबेला।

सागर गुप्ता, कक्षा-7

"शिक्षा की जड़ें तो कड़वी होती है, पर फल सदैव मीठा होता है।"

REPORT OF ENGLISH MEDIUM

"Education is the most powerful weapon which you can use to change the world."

— Nelson Mandela

It is an enduring tradition to take time to pause, turn around, to look at the fruitful year gone by we thank the almighty God for all the blessings bestowed upon us year after year.

With great pleasure, I present you, the Annual Report of S.K.I.C. English medium year 2019-20.

At present the total strength of the school is 210 students. Our first activity in July was "Yellow Day". The small kids came in attire of yellow flower to give the message, "Always beauty and fragrance all around." Yellow colour is the symbol of sunshine, hope and happiness. We celebrated Janmashtami. Tiny toddlers dressed themselves as Radha and Krishna.

Independence Day was Celebrated with patriotic fervor to pay rich tribute to the glorious martyrs of our nation.

Essay and poster competitions were held on "Fit India Movement" theme. September month began with the 'Teacher's Day' celebration. The celebration began with the cutting of the cake followed by a short cultural programme.

On Hindi Diwas, students of class I to V recited Hindi Poems and the students of class VI to VIII participated in 'Nibandh Pratiyogita." Every Child is a store house of talents so 'Dance and Singing competition was also organised. In October 'Rangoli' and Candle decoration competitions were conducted.

On 14th Nov. (Children's Day). We organised a 'Bal Mela'. There were many stalls of food and games. Teachers organized various quiz, games for the children and prizes were given to the winners. Fancy Dress Competition was also held on this day. Students enjoyed 'Bal Mela' with full zeal and enthusiasm.

Sports Day was held on 11/12/2019. Along with these activities 'Balika Suraksha Workshop was conducted to aware the girls for their safety purpose.

This year all the students and teachers had assembled in the school for the live telecast of program 'Man ki Baat' conducted by our Prime Minister Mr. Narendra Modi'.

The facility of library is also provided to the students. So, with the inauguration of 'Shatotsava' of our Khatri Pathshala, we are trying our best to make our children more poised and teaching them the skills so that they can face the competitive world of today.

I would like to express my heartfelt gratitude to the members of the Managing committee, the Principal Mr. L.C. Pathak and Mr. B.N. Mishra. I appreciate and thank my teaching staff members and the non-teaching staff members for endless support in making the session a success.

Thank you

Shoma Mishra
Incharge of English Medium

वृक्ष लगायें पर्यावरण बचायें

प्रदूषण का रख हरदम ध्यान,
चलायें वन रक्षा अभियान।
बढ़ाये पात बढ़ाये डाल,
बिछाये न आरों का जाल,
करें हम सब इनका सम्मान,
चलायें वन रक्षा अभियान।
हवा पानी पेड़ों की देन,
पेड़ ही मानवता की चेन,
पेड़ ही है जीवन की शान
चलायें वन रक्षा अभियान।
लगाते जब आरों की धार,
उन्हें भी होता दर्द अपार,
सुने सब ध्यान लगाकर कान,
चलायें वन रक्षा अभियान।
लुभाती सघन वनों की भीड़,
नारियल साखू, चन्दन-चीड़,
हमारे गौरव की पहचान,
चलायें वन रक्षा अभियान।

राधिका केसरवानी, कक्षा-4

विश्वास

कहानी तीन बेस्ट फ्रेंड्स की
ज्ञान, धन और विश्वास
तीनों बहुत अच्छे दोस्त थे,
तीनों में प्यार भी बहुत था।
एक वक्त आया जब तीनों को
जुदा होना पड़ा,
तीनों ने एक दूसरे से सवाल किया कि
हम कहाँ मिलेंगे।
ज्ञान : मैं विद्यालय, मस्जिद और मन्दिर में मिलूँगा।
धन : मैं अमीरों के पास मिलूँगा।
विश्वास चुप था, दोनों ने चुप होने का कारण पूछा,
तो विश्वास ने रोते हुए कहा : मैं एक बार चला गया तो,
फिर कभी नहीं मिलूँगा।

अतः धन और ज्ञान दोबारा मिल सकते हैं किन्तु विश्वास दोबारा प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए कभी किसी का विश्वास मत तोड़ों। विश्वास टूटने पर सम्बन्ध भी बिखर जाते हैं।

अनन्या, कक्षा-8

बेटी एक अनमोल सपना

मैं एक अनमोल सपना हूँ,
यहीं की मैं एक बेटी हूँ।
यह एक सत्य है कि मैं एक बेटी हूँ,
यह एक सुख अनुभव है कि मैं एक बेटी हूँ,
जिंदगी में बस त्याग किया है मैंने,
अपनी जिन्दगी दूसरों के लिए जिया है मैंने,
मैं सत्य हूँ, सुन्दर हूँ, शिव भी हूँ,
मैं ही माँ हूँ बहन भी हूँ।
मैं सृजन जानती हूँ,
तो विनाश भी करती हूँ,
संसार रचती हूँ, इसलिए जननी हूँ,
मैं एक अनमोल सपना हूँ,
यही कि मैं एक बेटी हूँ।

प्रिया कुमारी, कक्षा-7

ग़ज़ल

मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया।।
देने वाले ने दिया, वह भी दिया किस ज्ञान से।
मेरा है, यह लेने वाला कह उठा अभिमान से।।
मैं मेरा, यह कहने वाला मन किसी का है दिया।
जो मिला है वह हमेशा पास रह सकता नहीं।।
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया।

कपिल पाल कक्षा-9-ब

''शिक्षा दूसरों के जीवन में सुधार लाने के लिए और अपने समुदाय और दुनिया को आपसे बेहतर बनाने के लिए है।''

मेरा विद्यालय

मेरा विद्यालय सबसे न्यारा
हमको प्राणों से प्यारा
एस.के.आई.सी. इसका नाम
शिक्षित करना इसका काम
यहाँ के प्रधानाचार्य मेरी जान,
करते है इनका सम्मान,
एस.के.आई.सी. के हम है फूल,
दूर करे समाज के शूल।
यहाँ के शिक्षक है ज्ञानी
करते हमको शिक्षित और ज्ञानी।
बच्चे यहाँ के समय से आते,
पढ़ने में है ध्यान लगाते।
मेरा विद्यालय सबसे प्यारा,
हमको है प्राणों से प्यारा।

सार्थक सिंह, कक्षा-6

माता-पिता

माता पिता के बल से हमने
दुनिया को पहचाना
उनके कंधों पर सिर रखकर
अपना दुःख न जाना
पापा पापा कहकर हम
अपनी इच्छायें रखते
मम्मी मम्मी कहकर हम
अपने भावों को भरते
इनका जीवन सुखमय हो
कुछ ऐसा करके दिखलाना
माता-पिता के बलसे हमने
दुनिया को पहचाना।

आयुष वर्मा, कक्षा-7-ब

पुस्तक

ज्ञान का भण्डार है पुस्तक
सच्चे स्वर्ग का द्वार है पुस्तक
करे अंधेरे में उजियारा
जीवन का उद्धार है पुस्तक
दूर करे ये मन का अंधेरा
जीवन में हो नया सवेरा
जितना जयादा पढ़ते जाते
उतना बढ़े ज्ञान का घेरा।
मन की आँखें खोले पुस्तक
पढ़ो-पढ़ो सब बोले पुस्तक
ज्ञान भरी बाते सिखलाती
नया राज सब खेल पुस्तक।

श्रेष्ठ कुमार, कक्षा-6

हिन्दी भाषा

हिन्दी हमारी भाषा महान
इसका करो तुम सम्मान
इसे पढ़ें हम बने महान
यह देती हमें वो ज्ञान
जिससे बढ़ता हमारा मान सम्मान।
दीपक बन राह दिखाती
अज्ञानता को दूर भगाती
सरस्वती माँ का इसमें आशीर्वाद
कभी न छोड़ो इसका साथ।

श्रेष्ठ कुमार, कक्षा-6

''शिक्षा का उद्देश्य एक खुले दिमाग से एक खाली दिमाग को बदलना है।''

कहाँ गया पाकिस्तान

बार-बार तुझे माफ किया
अपना छोटा भाई मान लिया।
गैरों के संग रहने वाले
होश में आ जा रे नादान।
चीन अमेरिका बहका रहे तुझकों
आपस में लड़ा रहें हमको।
बता दें हम तुझको ऐ पाकिस्तान
रहेगा न तेरा नामोनिशान।
सब्र का फल मीठा होता।
सही सच्ची बात की जान।।
अब तो तेरा सिर कटेगा।
इकहत्तर में सिर्फ टाँग कटी थी।
हाथ जोड़कर माफी माँग,
मेरा भारत बड़ा महान।
सीने से लगा लेगा तुझको
वक्त को पहचान।
बन्द नहीं किया जो तूने
अब कश्मीर में कत्लेआम
विश्‍ व के नक्शों में ढूँढोंगे
कहाँ गया पाकिस्तान।।

अभिषेक कुमार आर्य, कक्षा-9-ए

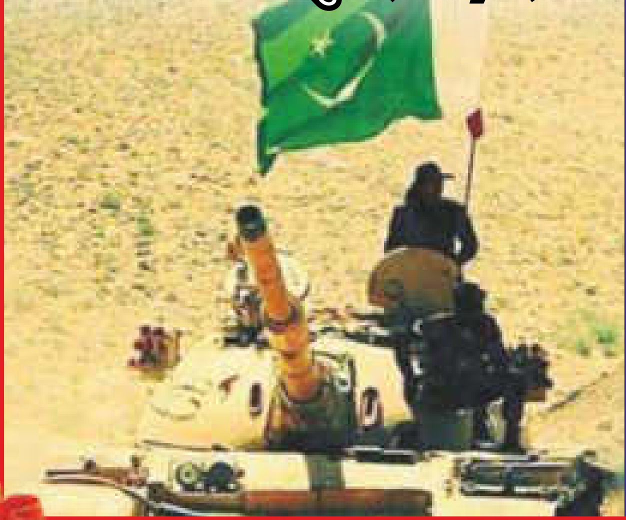

जनसंख्या

जनसंख्या जो ये तेजी से बढ़रही
बहुत से समस्यायें पैदा कर रही
खाद्यान्न संकट खड़ा हो गया।
ऊर्जा संकट बड़ा हो गया।
भुखमरी चारों ओर बढ़ी
गरीबी की समस्या सामने खड़ी
जनसंख्या जो में तेजी से बढ़रही
बहुत से समस्यायें पैदा कर रही
बेरोजगारी हताशा ला रही
आर्थिक संकट की चिंता खाए जा रही
मंहगाई तेजी से बढ़रही
आम लोगों का जीना मुश्किल कर रही
जनसंख्या जो ये तेजी से बढ़रही
बहुत से समस्यायें पैदा कर रही
भ्रष्टाचार तेजी से बढ़रहा
जनता को न्याय नहीं मिल रहा।
जंगल काटे जाते है।
पेड़ न कोई लगाते है।
जनसंख्या जो ये तेजी से बढ़रही
बहुत से समस्यायें पैदा कर रही
चारों ओर प्रदूषण जा रहा
नई-नई बीमारियाँ फैला रहा
खतरे में है वन्य जीवों का जीवन
हो रहे रोज उन पर नए नए सितम
जनसंख्या जो ये तेजी से बढ़रही
बहुत से समस्यायें पैदाकर रही
हमें इन समस्याओं से निजात पाना होगा।
जनसंख्या के बढ़ने पे अंकुश लगाना होगा।
हमें कुछ तो कदम उठाना होगा।
छोटा परिवार सुखी परिवार का नारा, लगाना होगा।

आलेख शर्मा, कक्षा-9 ए

''शिक्षा बस एक समाज की आत्मा है क्योंकि यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में गुजरती है।''

हँसना मना है !

रिचा - मैं रोज रात को नींद से उठ जाती हूँ बहुत परेशान हो गई हूँ, मच्छरों से छुटकारा पाने का कोई उपाय बताओ ना ?
प्रतिज्ञा - तुम रात को सोने से पहले एक मच्छर मार दिया करो, ताकि बाकी के मच्छर उसके जनाजे पर चले जाए ओर तुम मजे से सो सको।

संभव - यार पल्लव, क्या तुम्हें पता है कि चीन में बच्चों के नाम कैसे रखे जाते है।
पल्लव - जरूर इंटरनेट से देखकर रखे जाते होंगे बच्चों के नाम।
संभव - नहीं वहाँ जब बच्चों के नाम रखने होते हैं तो स्टील के बर्तन को जोर से जमीन पर फेंकते हैं, फिर उसमें से जो आवाज आती है वही नाम रखा जाता है है - टिंग, टोंग, टुंग।

पापा- वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी सिकुड़ रही है।
वैभव - पापा वैज्ञानिक प्रेस करके पृथ्वी की सिकुड़न दूर क्यों नहीं कर देते।

वकील - (मुजरिम से) : तुमने एक ही दुकान पर दो बार चोरी क्यों की।
मुजरिम - साहब ! उस दुकान के बोर्ड पर लिखा था कि दोबारा आइए।

पीयूष साहू, कक्षा-8

एक बाबू जी होटल में जाकर- वेटर वेटर पुकारने लगा। वेटर आकर जी बाबूजी ।
बाबू - तुम्हारे होटल में क्या-क्या है। जल्दी लाओ भूख लगी है।
वेटर - कुछ वस्तुओं का मूल्य गिनकर बिल बनाता है, लीजिए बाबू जी 110 रूपये का बिल है, रूपये दीजिए।
बाबू - अरे बिल तो बाद में दिया जाता है, तुम पहले क्यों माँग रहे हो ?
वेटर - बात यह है कि कल एक बाबू खाते ही मर गये और उसका बिल मुझे भरना पड़ा। आज मैं जोखिम नहीं ले सकता। इसीलिए मैं पहले ही रूपये ले रहा हूँ।

अमन साहू, कक्षा-7

नोटो का जुनून

घर में पापा ने बताया कि गर्मी खून में होती है। स्कूल में पता चला गर्मी जून में। बचपन से सुना था गर्मी ऊन में होती है, जिन्दगी में बहुत धक्के खाये तब जाकर पता चला कि गर्मी तो नोटो के जुनून में होती है।

सक्षम सिंह, कक्षा-7

''शिक्षा हमारी अज्ञानता की एक प्रगतिशील खोज है।''

पहेली

बताओ वो कौन-सी सब्जी है, जिसमें ताला और चाबी दोनों आते हैं।

बताओ वो कौन-सी चीज है जो धूप में आने पर जलने लगती है और छाँव में आने पर मुरझा जाती है और हवा चलने पर मर जाती है। बताओ क्या ?

मुर्गी अण्डा देती है और गाय दूध देती है, ऐसा कौन है जो अण्डा देता है, पर दूध भी देता है ? बताओ क्या ?

बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती है गोली। बच्चे बूढ़े सब डर जाते हैं सुनकर इसकी बोली। बताओ क्या ?

एक अनोखी ऐसी चीज, उजली धरती काला बीज, जो है इससे करते प्यार वे बन जाते है होशियार।

वह पाले न भैंस या गाय, फिर भी दूध मलाई खाये। घर बैठे ही करे शिकार, गया शेर भी उससे हार।

उत्तर : लॉक-की (लौकी), पसीना, चमगादड़, बंदूक, पुस्तक, बिल्ली

मंत्र

अगर आस्था है
तो बंद द्वार में भी आस्था है।
जिसने श्रम किया
उसने आंगन जला
सफलता का दिया।
न उतने हो
न इतने हो
तुम अपने 'व्यास' जितने हो।
रोशनी करने का ढंग
बदलना है
चिराग नहीं जलाने है
चिराग बनकर जलना है
मेहनत जो की जो तोड़कर
हर शौक से मुँह मोड़कर
कर देंगे दम में फैसला
मेहनत करो, मेहनत करो।

उज्ज्वल केसरवानी, कक्षा-12 ब

अनमोल वचन

घमण्ड बता देता है कितना पैसा है।
संस्कार बता देता है परिवार कैसा है।।
बोली बता देती है इंसान कैसा है।
बहस बता देती है ज्ञान कैसा है।।
नजरें बता देती है सूरत कैसी है।
स्पर्श बता देता है नियत कैसी है।

गौरव प्रजापति, कक्षा-7

''जब तक शिक्षा का मकसद नौकरी पाना होगा, तब तक देश में नौकर ही पैदा होंगे, मालिक नहीं।''

Republic Day

Celebration

स्व. आनन्द प्रकाश वर्मा

जनपदीय बालक/बालिका बैडमिंटन प्रतियोगिता

दसवीं स्व. आनन्द प्रकाश वर्मा स्मारक इस वर्ष इस प्रतियोगिता का आयोजन दिसम्बर को विद्यालय परिसर में किया गया। जूनियर बालिका वर्ग में मेरी वर्नामेकर की छात्रायें प्रथम स्थान पर, संत एंथोनी गर्ल्स की छात्रायें द्वितीय स्थान पर तथा टैगोर पब्लिक स्कूल की छात्रायें तृतीय स्थान पर रही। सीनियर बालिका वर्ग में मेरी वर्नामेकर प्रथम स्थान तथा आर्य कन्या द्वितीय स्थान पर थी। इसी क्रम में जूनियर बालक वर्ग में प्रथम स्थान पर पण्डित हनुमत दत्त त्रिपाठी के छात्र रहे तथा द्वितीय स्थान पर के.पी. इण्टर कॉलेज के छात्र थे। शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज के छात्र तृतीय स्थान पर थे।

सीनियर बालक वर्ग में पंडित हनुमान त्रिपाठी के छात्र प्रथम स्थान पर तथा शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कॉलेज के छात्र द्वितीय स्थान पर रहे। तृतीय स्थान महाऋषि बाल्मीकि के छात्रों ने प्राप्त किया।

बाल दिवस

Flower Day

Balika Surksha

विदाई समारोह

इण्टर कालेज

प्रगति आख्या

सत्र 2018-19

शांति, सौन्दर्य एवं अमृत-शीतलता से ओत-प्रोत, विविध रत्न सम्पदा से आच्छादित, स्वप्नों जैसी सजी-संवरी, सत्यम् शिवम सुन्दरम की यथार्थता का सम्यक बोध कराने वाली तथा अपनी नैसर्गिक छटा से स्वर्ग की कीर्ति को आच्छादित करने वाली रत्न प्रसविनी इस वसुधा पर मानव का अवतरण सृष्टि की सर्वोत्तम रचना का वास्तविक रूप है। रंग-मंच रूपी इस जगत में मनुष्य का कर्म प्रधान अभिनय उसके अस्तित्व एवं अस्मिता का मार्ग प्रशस्त करता है। इंसान छाया की भाँति इस जगत में अपना आगाज करता है और येन - केन प्रकारेण जीवन यापन कर अलौकिक एवं अज्ञात वीरानियों में लुप्त हो जाता हैं। शेष रह जाता है उसका सत्कर्म, उसका परोपकार, उसकी कृति एवं उसका समर्पण व बलिदान। जीवन सुख एवं वैभव के लिए नहीं वरन नेक एवं सकारात्मक व परोपकारी कार्यों को अंजाम देने के लिए होता है। कुछ इसी तरह के पुनीत कर्मो को अपने जीवन का लक्ष्य समझकर समाज की दिशा प्रशस्त करने वाले महान परोपकारी एवं लोकोपकारक लाला सदनलाल जी खन्ना ने बसन्त पंचमी के पावन पर्व पर सन् 1921 में सारस्वत खत्री पाठशाला के नाम से एक शिक्षण संस्था की स्थापना प्रयाग की पावन भूमि पर कर एक सच्चे मानव के रूप में कर के अपने जीवन को सार्थक बनाने का कार्य किया। सारस्वत खत्री पाठशाला सोसाइटी द्वारा संचालित शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कालेज वर्तमान में जनपद प्रयागराज की एक उत्कृष्ट शिक्षण संस्था के नाम से कर्तव्य निर्वहन के पथ पर अग्रसर है। वर्तमान सत्र 2019-20 में प्रवेश प्रक्रिया के माध्यम से कक्षा 01 से 12 तक कुल 2024 छात्र एवं अंग्रेजी माध्यम में कक्षा 01 से 08 तक 210 छात्रों का प्रवेश किया गया। इस प्रकार सत्र 2019-20 की सम्पूर्ण छात्र संख्या 2234 है। गत वर्ष की छात्र संख्या 2179 थी। सत्र 2019 में बोर्ड परीक्षा में विद्यालय का परीक्षाफल निम्नवत् रहा-

इण्टरमीडिएट

वर्ग	परीक्षा में सम्मिलित	उत्तीर्ण	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	ससम्मान	उत्तीर्ण प्रतिशत
कला	24	21	01	15	05	00	87.5
विज्ञान	85	75	46	29	00	07	88.23
वाणिज्य	40	40	10	24	05	01	100
योग	**149**	**136**	**57**	**69**	**10**	**08**	**91.91**

विद्यालय में प्रथम शुभम कपरिया (1313275) 423/500 (84.60%), द्वितीय अमित कुमार (1313211) 420/500 (84%), तृतीय उत्कर्ष टण्डन (1313347) 401/500 (80.2%) स्थान पर रहे।

हाईस्कूल

परीक्षा में सम्मिलित	उत्तीर्ण	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	ससम्मान	उत्तीर्ण प्रतिशत
169	**152**	**98**	**54**	**00**	**08**	**90%**

विद्यालय में प्रथम रितिक कुमार (1644092) 484/600 (80.66%), द्वितीय शिवांश पाण्डेय (1644114) 471/600 (78.5%), आकाश (1643981) 462/600 (77%) स्थान पर रहे।

उत्तर प्रदेश में हाईस्कूल का उत्तीर्ण प्रतिशत 80.07% तथा इण्टर का 70.06% रहा।

साहित्यिक - सांस्कृतिक परिषद की आख्या :

विद्यालय के निरन्तर पठन-पाठन के बीच सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद ने सत्र 2018-19 में अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन किया। यह सत्र सदैव संस्मरण में रहेगा।

दिनांक 23-09-2018 को सैम हिगिंनाबाटम कृषि संस्थान ने राज्य स्तरीय भाषण, निबन्ध, क्विज एवं सम-सामयिक विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया। विद्यालय के छात्र सत्य प्रकाश शुक्ल कक्षा 12 ब, अनुराग शुक्ल 12 ब, अनुराग केसरवानी 12 ब एवं अभिषेक शर्मा 12 स ने उक्त प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। विद्यालय के छात्र सत्य प्रकाश शुक्ल 12 ब ने वाद-विवाद, निबन्ध एवं

भाषण प्रतियोगिता तीनों में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय को राज्य के पटल पर सिरमौर बना दिया।

अगस्त माह में आयोजित भारत रत्न-पुरूषोत्तम दास टण्डन जन्मशती पर रमादेवी बालिका विद्यालय में विद्यालय से 116 छात्रों ने प्रतिभाग किया। उक्त प्रतियोगिता में 1600 छात्रों से अधिक छात्रों के मध्य विद्यालय के छात्र श्री सत्य प्रकाश शुक्ल 12 ब ने प्रथम स्थान प्राप्त कर एक बार पुनः विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

स्मरणीय है कि दिनांक 1.11.2018 को शहर के प्रतिष्ठित विद्यालय सी०ए०वी० इण्टर कालेज के शताब्दी समारोह पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र सत्य प्रकाश शुक्ल 12 ब (पक्ष) एवं उज्जवल साहू 12 ब (विपक्ष) ने प्रतिभाग किया। शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र, उ०प्र० बोर्ड एवं C.B.S.E., I.C.S.E. बोर्ड के 56 विद्यालयों ने उक्त प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। वाद-विवाद का विषय 'भारतीय समाज के परिपेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा की प्रासंगिकता' विषय के पक्ष में बोलते हुए श्री सत्य प्रकाश शुक्ल ने उक्त प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर, विद्यालय के गौरव को एक बार पुनः शीर्ष पर पहुँचा दिया।

इसी क्रम में वर्ष 2019 का आरम्भ महाकुम्भ के आयोजन के लिए सदैव स्मरणीय रहेगा। उक्त पुनीत एवं भव्य आयोजन की सार्थकता को रेखांकित करने के लिए दिनांक 03.01.2019 को जनपद के प्रतिष्ठित विद्यालय के०पी० इण्टर कालेज ने अपने भव्य सभागार में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसका विषय **'कुम्भ का आयोजन-हानि अथवा लाभ'** था। उक्त अवसर पर विद्यालय की चयनित छात्रों की टोली का प्रतिनिधित्व सत्य प्रकाश शुक्ल 12 ब (पक्ष) एवं उज्जवल साहू 12 ब (विपक्ष) दोनों ने ही प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय की गुणवत्ता एवं शौर्य को अन्य विद्यालय के मध्य चर्चा का विषय बना दिया।

हमारा प्रतिष्ठित विद्यालय प्रतिवर्ष 'वार्षिकोत्सव आरोहण' का आयोजन करता है जो न केवल विद्यालय अपितु सम्पूर्ण शहर भर में चर्चा एवं उत्सुकता का विषय रहता है। दिनांक 19.01.2019 को वार्षिकोत्सव 'आरोहण' का आयोजन किया गया। स्मरणीय हो कि उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि सचिव माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज विदुषी श्रीमती नीना श्रीवास्तव ने पधार कर वार्षिकोत्सव की संध्या शोभा में आवर्द्धन किया। अपने उद्बोधन में आपने विद्यालय एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। सह जिला विद्यालय निरीक्षक एवं प्रबन्धकतंत्र के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति प्रेरणादायक रही। कार्यक्रम के आरम्भ से अन्त तक दर्शक मंत्र मुग्ध रहे। इस अवसर पर विद्यायल के होनहार छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

इसी क्रम में 3.04.2019 को मोती लाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालेज प्रयागराज में उ०प्र० मा०शि०प०केन्द्रीय शिक्षा परिषद एवं I.C.S.E. बोर्ड के जनपद के सभी विद्यालयों को वर्तमान शिक्षा की सार्थकता विषय पर विचार गोष्ठी में आमंत्रित किया गया। विद्यायल के तीन छात्रों के दल का प्रतिनिधित्व सत्य प्रकाश शुक्ल 12 ब ने किया। विद्यालय की इस टोली ने प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थान में एक बार पुनः अपनी विद्वता का लोहा मनवा दिया। सत्य प्रकाश शुक्ल एवं टोली ने जनपद में प्रथम स्थान प्राप्त कर हमें गौरवान्वित होने का अवसर दिया।

विज्ञान परिषद की उपलब्धियाँ :

विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विज्ञान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए वर्ष 2018-19 में शहर दक्षिणी संभाग का राष्ट्रीय बाल विज्ञान कॉग्रेस नोडल स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय में हुआ जिसमें आठ विद्यालयों के जूनियर तथा सीनियर वर्ग में 65 बाल वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया। विद्यालय के सीनियर वर्ग में उज्ज्वल साहू, रितिक केशरवानी, आलोक सिंह, शुभम कपरिया, अभिषेक मिश्र व आदर्श सिंह एवं जूनियर वर्ग में मो० साहिल के शोध पत्रों का चयन जिलास्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ। उज्ज्वल साहू व रितिक केशरवानी का अगले चरण में चयन प्री-स्टेट के लिए हुआ।

इसी क्रम में विज्ञान के प्रयोगों को स्वयं करके सीखने को, विद्यालय के छात्र राहुल कुमार 8 बी ने अपना कार्यकारी मॉडल (Solenoid Engine) का प्रस्तुतीकरण सेंट एन्थोनी गर्ल्स इण्टर कालेज में करके विद्यालय का गौरव बढ़ाया। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित इंस्पायर एवार्ड योजना के अंतर्गत उक्त छात्र का चयन हुआ था जिसमें मॉडल इत्यादि के खर्च हेतु प्रतिभागी को केन्द्र सरकार की ओर से रु0 10000/- की धनराशि प्रदान की गई थी।

विद्यालय स्तर पर भी छात्रों में विज्ञान के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गए। विज्ञान के प्रति अभिरूचि जागरण हमारा एकमात्र संकल्प है।

कम्प्यूटर विभाग की आख्या :

सारस्वत खत्री पाठशाला द्वारा संचालित शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कालेज, प्रयागराज वर्तमान परिदृश्य में ई-शिक्षा/तकनीकी शिक्षा पर अपना जोर दे रहा है, जहाँ विज्ञान व कम्प्यूटर व्याख्यान का संचालन प्रोजेक्टर व अन्य युक्तियों के प्रयोग का

प्रेजेन्टेशन तैयार कर छात्रों को सूचना की नई-नई विधियों से रूबरू करा रहा है।

विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा या यूँ कहें तकनीकी शिक्षा कक्षा 6 से 8 अनिवार्य विषय के रूप में तथा कक्षा 9 से 12 वैकल्पिक विषय तथा अंग्रेजी माध्यम में छात्र-छात्राओं को विषय के रूप में कक्षा 1 से 8 तक दी जा रही है।

कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों हेतु समय - समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिता संचालित की जाती रही है जिसका उद्देश्य तकनीकी रूप से लोगों की जागरूकता को बढ़ाता है। विद्यालय में कम्प्यूटर प्रयोगात्मक कार्य हेतु भव्य उपकरणों से सुसज्जित वातानुकूलित प्रयोगशाला की व्यवस्था की गयी है साथ ही विद्यालय में वाई -फाई की सुविधा भी उपलब्ध है।

खेलकूद में विद्यालय को प्राप्त उपलब्धियाँ :

वर्ष 2018 में नगर दक्षिण एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन मजीदिया इस्लामिया इण्टर कालेज के क्रीड़ा प्रांगण में आयोजित किया गया। इसमें विद्यालय के 35 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया और कुल 20 पदक जीते जिसमें 11 स्वर्ण पदक, 5 रजत पदक तथा 4 कांस्य पदक जीते। इसके साथ ही सीनियर वर्ग की 5000 मी॰ दौड़ में दशरथ वंशकार ने प्रथम स्थान तथा जूनियर वर्ग की 3000 मी॰ में आकाश यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जनपदीय प्रतियोगिता हेतु 10 छात्रों का चयन किया गया। यह प्रतियोगिता मदन मोहन मालवीय स्टेडियम में आयोजित की गई जिसमें दशरथ वंशकार ने 01 स्वर्ण तथा 01 रजत पदक क्रमशः 500 मी॰ एवं 800 मी॰ की दौड़ में प्राप्त किया तथा आकाश यादव ने 300 मी॰ की दौड़ में कांस्य पदक प्राप्त किया।

दिनांक 22 दिसम्बर 2018 को विद्यालय के क्रीड़ा प्रांगण में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभिन्न वर्गो में कुल 45 प्रतिस्पर्धायें आयोजित की गई।

सर्वाधिक अंक एवं स्वर्ण पदक विजेता के रूप में दशरथ वंशकार को विद्यालय का चैम्पियन घोषित किया।

सेवा समिति इण्टर कालेज में जनपदीय एवं मण्डलीय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नगर दक्षिण की टीम से विद्यालय के 8 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया तथा जनपदीय प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। मण्डलीय प्रतियोगिता हेतु विद्यालय के 2 छात्रों का चयन किया गया।

जूनियर वर्ग जनपदीय क्रिकेट चयन प्रतियोगिता का आयोजन गवर्मेन्ट प्रेस क्रिकेट ग्राउण्ड पर किया गया जिसमें से विद्यालय के छात्र यश पाल का चयन जनपदीय टीम के लिए किया गया।

मण्डलीय प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन के कारण इलाहाबाद जनपद की टीम विजेता रही। इस प्रतियोगिता के उपरान्त यश पाल का चयन मण्डलीय टीम में किया गया।

जनपदीय एवं मण्डलीय बैडमिण्टन प्रतियोगिता के संयोजक के रूप में प्रतियोगिता सम्पन्न कराने का दायित्व जिला विद्यालय निरीक्षक इलाहाबाद द्वारा विद्यालय को सौंपा गया। विद्यालय ने इस प्रतियोगिता का आयोजन अमिताभ बच्चन स्पोर्ट्स संकाय में किया। इस प्रतियोगिता में नगर दक्षिण बालक सीनियर वर्ग की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के छात्र मोहसिन का चयन मण्डलीय टीम में किया गया। 08-10-2018 से 10-10-2018 तक प्रदेशीय बैडमिण्टन बालक बालिका प्रतियोगिता का आयोजन बरेली में किया गया। जिसमें इलाहाबाद मण्डल की सीनियर बालक वर्ग की टीम विजेता रही तथा विद्यालय के छात्र मोहसिन को स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

सत्र् 2018-19 में विद्यालय में विकास के प्रमुख सोपान :

1. रसायन विज्ञान प्रयोगशाला की प्रभावी एवं अनुकरणीय बनाने हेतु रु0 21625 के केमिकल्स एवं ऑपरेटर्स का क्रय किया गया।
2. प्रांगण में पेय जल एवं वाशरूम को स्वच्छ एवं आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मरम्मत एवं नवीनीकरण का कार्य पूर्ण हुआ जिसमें रु0 213000/- की धनराशि का व्यय हुआ।
3. प्रथम तल (उत्तरी विंग - अंग्रेजी माध्यम) तक पहुँचेने हेतु सीढ़ियों में पत्थर का कार्य पूर्ण कराया गया। उक्त मरम्मत कार्य में रु0 163122/- की धनराशि का प्रयोग हुआ।

4. शिक्षा निदेशक, संयुक्त शिक्षा निदेशक एवं जिला विद्यायल निरीक्षण के निर्देशानुसार बोर्ड परीक्षा 2019 के आयोजन हेतु प्रत्येक कक्ष एवं सम्पूर्ण परिसर में डिजिटल कैमरे एवं वायस रिकार्डर की व्यवस्था कराए जाने के अनुपालन में विद्यालय में कुल 21 कक्षों में दो-दो कैमरे एवं प्रत्येक कक्ष में वायस रिकार्डर सिस्टम को आधुनिक DVR सहित संचालित किया गया। वर्तमान सत्र में उक्त सम्पूर्ण व्यवस्था यथावत व्यवस्थिति है। इस कार्य को अमली जामा पहनाने में रु0 204900/- एवं रु0 150091/- की धनराशि का उपयोग किया गया।

विशिष्ट उपलब्धियाँ :

1. कक्षा 12 (विज्ञान वर्ग) में विद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले होनहार एवं मधावी छात्र शुभम कपरिया JEE ADVANCE ने की परीक्षा में आल इंडिया में 346 (SC) रैंक प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।
2. विद्यालय के कक्षा 9 के छात्र यश पाल ने अण्डर 17 जनपद, मण्डल एवं प्रदेशीय स्तर पर क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रयागराज मण्डल का प्रतिनिधित्व किया।
3. महोसिन जैदी (कक्षा 11 के छात्र) सीनियर वर्ग अण्डर 19 में मण्डल स्तरीय बैडमिण्टन प्रतियोगिता में टीम का प्रतिनिधित्व किया। उक्त टीम प्रथम स्थान पर विजेता घोषित की गयी।
4. अंग्रेजी माध्यम में कक्षा 07 एवं 08 के दो होनहार छात्रों आयुष त्रिपाठी एवं विभू त्रिपाठी विज्ञान ओलम्पियाड में विजयी रहे एवं स्वर्ण पदक प्राप्त किए।
5. शहर दक्षिणी नोडल स्तर की राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें जूनियर तथा सीनियर वर्ग में संभाग के 65 बाल वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया। उक्त प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र उज्ज्वल साहू एवं ऋतिक केसरवानी ने Pre state तक प्रतिभाग किया।
6. मेधावी एवं होनहार छात्रों के उत्साहवर्द्धन हेतु सारस्वत खत्री पाठशाला द्वारा विद्यालय को स्थायी/अस्थायी छात्रवृत्तियों हेतु एक सम्मानजनक धनराशि विगत अनेक वर्षो से प्रदान की जा रही है। विगत सत्र 2018-19 में सोसाइटी ने उक्त छात्रवृत्तियों हेतु रु0 56100/- की धनराशि पात्र छात्रों के नाम चेक द्वारा प्रदान किया। हमारा विद्यालय परिवार अपनी उदार सारस्वत खत्री पाठशाला सोसाइटी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता है एवं इस तरह के आर्थिक सहयोग की सदैव कामना करता है। आगामी सत्र 2020-21 में शताब्दी वर्ष मनाए जाने हेतु सम्पूर्ण विद्यालय परिवार अपनी सोसाइटी के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का आकांक्षी है।
7. आप सभी प्रबुद्ध जन एवं दान दाताओं व शिक्षाविदों के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में विद्यालय नूतन एवं अपेक्षित उपलब्धियों एवं परिलब्धियों को अनवरत प्राप्त करता रहे, उस अविनाशी एवं अजेय परमपिता से यही प्रार्थना है। अन्त में पुनः विद्यालय के संस्थापक लोकोपकारक लाला सदनलाल जी खन्ना के प्रति विद्यालय सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता है जिनके अलौकिक प्रयास से यह संस्था अपने मूल अस्तित्व एवं अस्मिता को प्राप्त कर सकी। यशः एवं स्मृति शेष लाला सदन लाल जी स्वयं में एक युग पुरूष थे।

युग परिवर्तक, युग संस्थापक,
युग संचालक, हे युगाधार।
युग निर्माता, युग मूर्ति तुम्हें,
युग, युग तक युग का नमस्कार।।

धीरज खन्ना

प्रबन्धक

शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कालेज
प्रयागराज

Salute to The Indian Army

For us they are on border,
Who can't break the order,
Who are always ready to sacrifice,
They are as hard as Himalayan ice
Salute to the Indian soldiers !

Because of them we are alive,
And, we are secure in Indian hive
Who always look for command,
Who have only one hand
Salute to the Indian soldiers !

They fight in battle without any fear,
there is no security of future year,
Who don't know the difference of day and night
Salute to the Indian Soldiers !
Who celebrate their festivals with bullets and guns

We play Holi with colours,
but they play with rifles and guns
They know only one colour which is 'Blood Red'
Salute to the Indian Soldiers !

We complain hot and cold days,
While they stay in harsh Siachin everyday.
They are never sure of their own Lives,
Again and again salute to the Indian soldiers.

Shreya Srivastava, VII

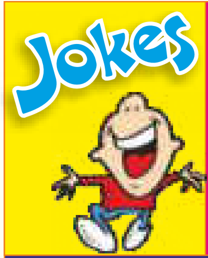

Ram - Do you like eggs ?
Shyam - No
Ram - Why ?
Shyam - Because they always appear on my report cards.

Riya - I am the most hard working student of my school.
Mother - How ?
Riya - I keep standing in class all day.

Rama - Everyone bows his head in front of my father.
Rani - Who is your father.
Rama - A barber.

Rohit Sharma, VIII

The Legendary LATA MANGESHKAR

Lata Mangeshkar is one of the best singers of the Hindi Film industry. She is listed in the Guinnese book world records as the most recorded artist in the world. Lata is said to have recorded songs for over a thousand Hindi films. She also has the credit of having sung in our thirty-six languages and foreign languages. Lata Mangeshkar is the elder sister of singers Asha Bhosle, Hridayanth Mangeshkar, Usha Mangeshkar. She was honoured with India's Highest award in Cinema, the Dada Saheb Phalke Award in 1989. She collaborated with notes male playback singers like Mohammad Rafi, Kishore Kumar and Many others. She became the unrivaled queen of the playback industry and enjoyed star status, Lataji has received numerous awards and honours for her illustrious career as a playback singer. Some of the award she won are Padma Bhushan, Dada saheb Phalke Award, Padam Vibhusan and Much more. She was awarded highest civilion award in 2011. She won three national film awards. She was awarded the filmfare lifetime achievement award in 1993.

Shreya Srivastava, VII

Secularism in India

The preamble to the constitution of India decribes India as a sovereign, secular democratic and republic state. According to the constitution therefore, India is a state that hold its own intergoing and its free from any foreign control, it is a republic in the sense that the Government of the state is only a representative of the people and people possess the right to elect members to the parliament and change representative with the help of elections.

Similarly India is also a secular state. This implies that each and every citizen of India has the right to practice, progress and propagate any religion of their own choice. They can worship any God, and follow any religion of their own choice without having to worry about social barriers.

—Archit Mehrotra, VII

''शिक्षा में आपके सारे दुखों को खत्म करने का सामर्थ्य है।''

Indian Army

Let us honour our armed Forces !
The men or women who serve
Whose dedication to our country
Doesn't falter, halt or swerve.
Let's respect them for their courage !
They are ready to do what is right
To keep indians safe.
So we can sleep peacefully at night.
Let's support and defend the soldiers.
Whose hardship is not brutal and cruel,
Whose discipline we can't imagine.
Who fallow each order and help us to dwell.
Salute those who choose to be warriors.
And their helps, good and true.
They are fighting for me and you.
Jai Hind !

Abhishek Kumar Maurya, Class-VIII

Short Cuts

Now Shortcuts to Success

1. There is not short cut to success.
2. Be Ambitious to attain Success.
3. Forget the past and Live in Present.
4. Develop a positive outlook.
5. Respect criticism.
6. Learn new things.
7. Grab the opportunities.
8. Don't curse failure.
9. Formulate your plan.
10. Strive to achieve the goal in certain time.

Naman Verma, Class-V

Doubt And Faith

Doubt sees the obstacle.
Faith sees the ways to guide
Doubt sees the darkest night
Faith sees the brightest day
Doubt dreads to take a step
Faith sees a ray of hope.
Doubt questions "Who's the believe".
Faith answers "It is me".

—Kulsum Qamar, VI

Joy of Friendship

My life has been touched
By God today,
For he saw to it
To send a friend my way
And I want you to know
Wherever you may be,
How much joy your friendship
Has brought to me
Nothing can compare
To the warmth of a friend
And I count you among my blessings
At each days end
So thank you friend
For making me smile
And sending some cheer
Across the smile.

—Naitik Verma, IV

''हम जितना अध्ययन करते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता है।''

शिक्षक

मत पूछिये कि शिक्षक कौन है ?
आपके प्रश्न का सटीक उत्तर
आपका मौन है।
शिक्षक न पद है, न पेशा है, न व्यवसाय है।
न ही गृहस्थी चलाने वाली कोई आय है।
शिक्षक सभी धर्मों से ऊँचा धर्म है
गीता में उपदेशित
"मा फलेषु वाला कर्म है।।
शिक्षक एक प्रवाह है।
मंजिल नहीं राह है।।
शिक्षक पवित्र है।
महक फैलाने वाला इत्र है।
शिक्षक स्वयं जिज्ञासा है।
खुद कुआँ है पर प्यासा है।
वह डालता है चाँद सितारों,
तक को तुम्हारी झोली में
वह बोलता है बिल्कुल
तुम्हारी बोली में।।
वह कभी मित्र,
कभी माँ,
तो कभी पिता का हाथ है।
साथ ना रहते हुए भी
ताउम्र का साथ है।।
शिक्षक कबीर के गोविंद सा,
बहुत ऊँचा है।
कहो भला कौन
उस तक पहुँचा है।
शिक्षक एक विचार है।
दर्पण है, संस्कार है।।
शिक्षक न दीपक है
न बाती है,
न रोशनी है।
वह स्निग्ध तेल है।
क्योंकि उसी पर,
दीपक का सारा खेल है।
शिक्षक भाषा का मर्म है।
अपने शिष्यों के लिए धर्म है।
वह राष्ट्रपति होकर भी
पहले शिक्षक होने का गौरव है।
वह पुष्प का बाह्य सौन्दर्य नहीं,
कभी न मिटने वाली सौरभ है।
हाँ अगर ढूँढ़ोंगे, तो उसमें
सैकड़ों कमियाँ नजर आयेंगी।
तुम्हारे आसपास जैसी ही
कोई सूरत नजर आयेंगी।
लेकिन यकीन मानो जब वह,
अपनी भूमिका में होता है,
तब जमीन का होकर भी,
वह आसमान सा होता है।
अगर चाहते हो उसे जानना
ठीक-ठीक पहचानना।
तो सारे पूर्वाग्रहों को
मिट्टी में गाड़ दो।
अपनी आस्तीन पे लगी,
अहम की रेत झाड़ दो।।
फाड़ दो वे पन्ने जिनमें,
बेतुकी शिकायते हैं।
उखाड़ दो वे जड़े,
जिनमें छुपे निजी फायदे हैं।।

आरती मेहरोत्रा

''शिक्षा और मेहनत एक ऐसी सुनहरी चाबी होती है जो बंद भाग्य के दरवाजे बहुत आसानी से खोल देती है।''

बसंत पंचमी महोत्सव

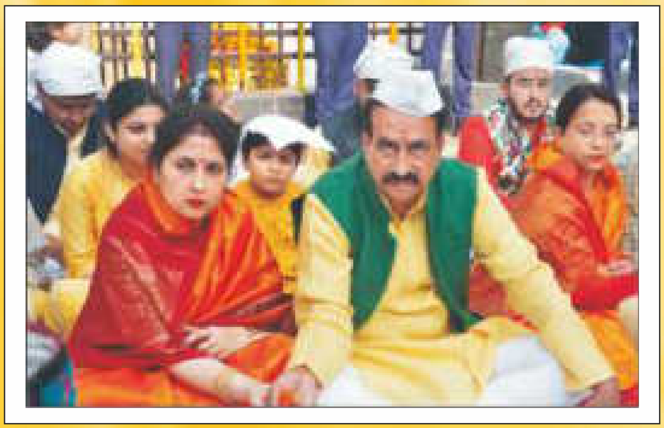

कॉंफ्रेंस हॉल
उद्घाटन

दीपावली महोत्सव

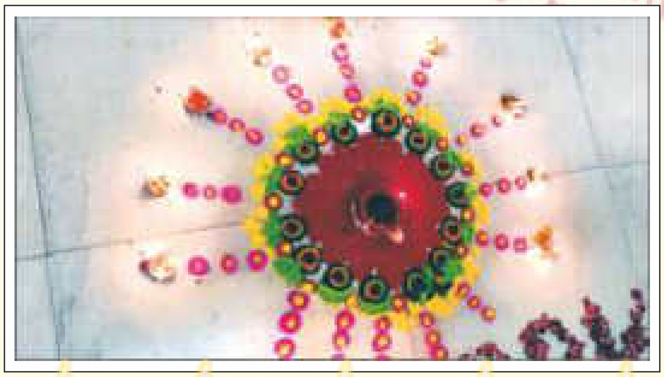

Janamashtami
Celebration

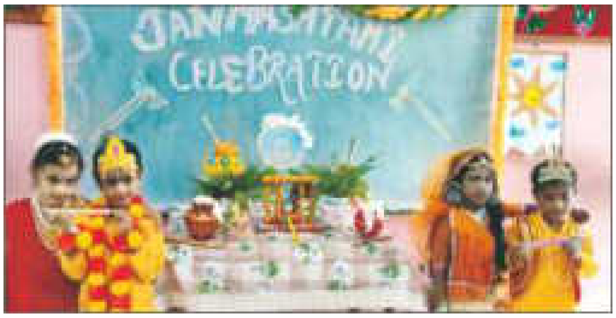

Annual Sports

OATH Ceremony

हिन्दी दिवस

हमारे सहयोगी

तन्दुरुस्ती हजार नियामत

मतदान दिवस

'महत्व एवं हमारा कर्तव्य' कार्यशाला

27वाँ राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस-2019

पुरुषोत्तम जयन्ती कार्यक्रम

संस्कारशाला-2019

Medal & Scholorship Distribution

शतोत्सव समारोह

SARASWAT KHATRI PATHSHALA

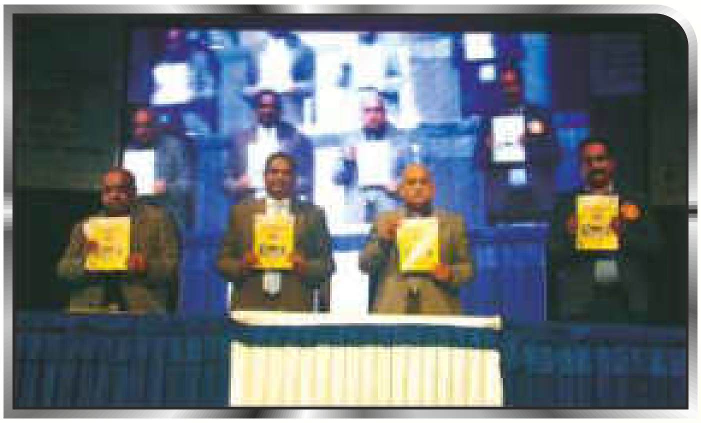

SARASWAT KHATRI PATHSHALA

SARASWAT KHATRI PATHSHALA

धारा 370 और 35 (ए)

1947 के बाद इतिहास में 5 अगस्त, 2019 अपने विशेष महत्व और युगान्तकारी प्रभाव के कारण एक विशेष तिथि बन गई है। जिस अनुच्छेद 370 तथा 35 (ए) को हटाना असम्भव व अकल्पनीय माना जा रहा था। उस ऐतिहासिक भूल को सुधारने का दावा करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू कश्मीर पुर्नगठन अधिनियम 2019 को क्रियान्वित कर सभी राजनीकि दलों के साथ-साथ पाकिस्तान एवं विश्व के अन्य देशों को भी स्तब्ध कर दिया।

पाकिस्तान को यदि छोड़ दिया जाये तो राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसका विरोध देखने को नहीं मिला जो वर्तमान समय भू-सामरिक, राजनैतिक एवं जनहित को प्रदर्शित करता है। वर्तमान में यदि कश्मीर की स्थिति देखे तो यह भारत के अन्य राज्यों से पिछड़ा हुआ है। जम्मू कश्मीर में न तो वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। और न ही सूचना तकनीक क्रांति (जनसंचार) का। भारत के कुल जी.डी.पी. में जम्मू कश्मीरका योगदान मात्र एक फीसदी है। इन सभी के पीछे प्रमुख रूप से संविधान के अनुच्छेद 370 एवं अनुच्छेद 35(ए) जैसे विभेदकारी विधान ही शामिल है जिसके परिणामस्वरूप राज्य की स्थिति बंद किले के समान हो गई थी जो किसी भी नवीन या विकासकारी प्रवृत्तियों प्रावधानों को आने से रोक देता था।

व्यापार-वाणिज्य के विकास तथा निवेश के कारण देश के दूसरे क्षेत्र विकसित होते रहे जबकि जम्मू कश्मीर आर्थिक बाध्यताओं तथा संरक्षण के कारण इस विकास से वंचित रहा। वर्तमान में जम्मू कश्मीर 370 निरस्त होने के पश्चात् से वंचित रहा। वर्तमान में जम्मू कश्मीर से बेहतर निवेश अवसर राजकोषीय प्रबन्धन आपदा प्रबन्धन योजना एंव परियोजनाओं का बेहतर कार्यान्वयन एवं निष्पाद न रोजगार सृजन केन्द्र तथा केन्द्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों (WHO, UNICEF, WB) इत्यादि। से पर्याप्त निधि तथा अन्य सहायता आदि की सुलभता जम्मू कश्मीर को भी प्राप्त हो सकेगी। जिसके माध्यम से निसंदेह विकास की नई इबारत लिखी जायेगी जो शीघ्र ही आतंकवाद प्रभावित जम्मू कश्मीर से धरती के स्वर्ग के रूप में रूपान्तरित हो जायेगा। यह एक भारत सशक्त भारत की आवश्यकता की अवधारणा को मूर्त रूप में प्रदान करेगा। ये है दो

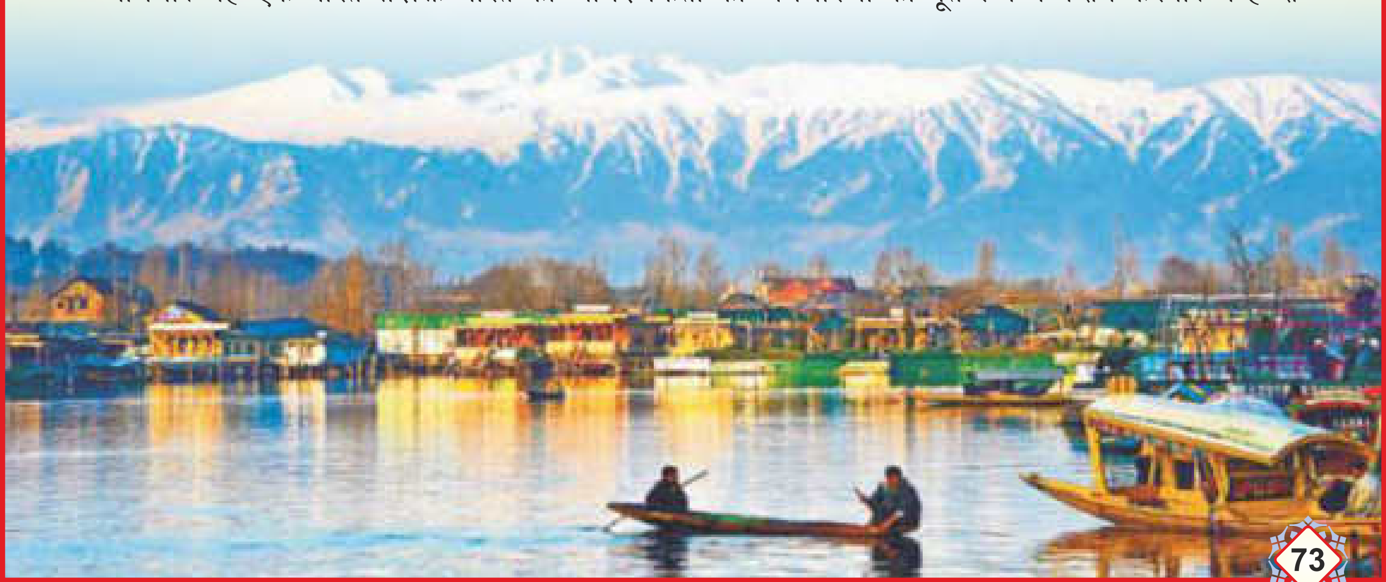

शब्द अकस्मात ही मिला दान में एक अनोखा लाल माँ ने देखा बेटे को आँखें हो गई निहाल। मांस काटते थे शरीर का पर न हृदय में तड़पन।

बूँद-बूँद कर रक्त टपकता पर हँसते थे लोचन। नजरिया।
मंदिर में दाना चुगकर चिड़िया 'मस्जिद' में पानी पीती है।
मैंने सुना है 'राधा की चुनरी कोई' सलमा बेगम सीती है।
एक 'रफी' था महफिल-महफिल, 'रघुपति राघव' गाता था।
एक प्रेमचन्द 'बच्चों को ईदगाह सुनाता था।
कही कन्हैया की महिमा गाता, 'रसखान सुनाई देता है।
बैठा माता के आँगन में नाता भाई-बहन का समझे उसकी प्रसव
वेदना वही लाल है माई का एक साथ मिल बाँट लो सुनूँगी माता
की आवाज रहूँगी मरने को तैयार कभी भी और को दिखते होंगे।
हिन्दू और मुसलमान मुझे तो हर शख्स के भीतर 'इंसान' दिखाई देता है, क्योंकि
न हिन्दू बुरा है न मुसलमान बुरा है।
जिसका किरदार बुरा है वो इंसान बुरा है।
क्योंकि यही है ये नजरिया।
मुझको नहीं जरूरत के मुझको समाज मुझको नहीं जरूरत ए जनता तू
तू जानता है मुझकोये बात ही बहुत है।
मैं पापी हूँ या कपटी ये जनता तू मुझे में भी है
वे शक्ति पर जानता तू मुझे में भी है जरूरत कोई ऐसा है नजरिया।
सीस पर गंगा हँसै भुजनि भुजंगा हँसै
हास ही को दंगा भयो जंगा के विवाह में।।
हँसि-हँसि भाजै देखि दूल्ह दिगम्बर को।
पाहुनी जो आवै हिमाचल के उछाल में।।

अंकित शर्मा, कक्षा-10-ए

कविता

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी
जल कर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी।
यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की
अंतिम लीला स्थली यही है।
लक्ष्मी मरदानी की।।
सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर लाल-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला सी।
बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की भस्म मढ़ा सोने से।।
है वीरों की बानी।।
बुंदेले हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी, झाँसी वाली रानी।
यह समाधि यह चिर समाधि है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लीला स्थली यही है लक्ष्मी मरदानी की।।

अंकित शर्मा, कक्षा-10-ए

मॉनीटर

ये मॉनीटर बने क्लास के
खाली ज्ञान दिखाते है
यदि कक्षा में शिक्षक न हो
खुद शिक्षक बन जाते हैं।
तनिक बोल दो धीरे से तो
कागज पर लिख देते नाम
मैडम जी से चुगली करना
हर दम रहता इनका काम
अपनी तो बस गलती माफ
बस हमें बलि बढ़ाते है।
वो क्लास तो संभाल पाते नहीं
बस चीखते चिल्लाते है।

अंकित शर्मा, कक्षा-10-ए

मातृ-भूमि पर एकता

आजाद हुआ आजाद पुनः सब बन्धन से
बँध गया एक ही बंधन में निज जीवन में
वह राष्ट्र-भक्ति का बंधन था सौभाग्य बड़ा
जीवन का होता जो त्रिकाल में त्रिभुवन में।
फिर जहाँ कमीशन गया वहाँ ही तीव्र रोष,
था बहिष्कार अपमान और जन-रोष मिला।
लठियाँ पुलिस बरसाती होते जयकारे
शासन की सारी शान और सब जोश हिला।
''था पुलिस ऑफिसर वहाँ स्काट करके इंगित
निर्मम प्रहार करवाता रह खड़े होकर
पंजाब केसरी वयोवृद्ध ने सहन किया
मन से तन से योगी सम परम परे होकर।''
भारत-माता का मस्तक अब गर्वोन्त था।
पर आँखें थीं आँसू के जल में भीग गई,
ये लाल चढ़गए बलि वेदी पर और इधर
था स्वतंत्रता रण शेष अभी होना विजयी।।
रहो खुश मेरे हिन्दुस्तान
तुम्हारा यथा हो मंगलमूल।
सदा महके बन चन्दन चारू
तुम्हारी अँगनाई की धूल।।
आजादी हमको शीघ्र मिले।
यह पहली माँग हमारी है।
दिल्ली में हो शासन अपना
यह माँग दूसरी प्यारी है।
खींचों न कमानों को न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।

अंकित शर्मा, कक्षा-10-ए

''जीतने का सबसे ज्यादा मजा तब आता है, जब सारे आपके हारने का इंतेजार कर रहे हो।''

भारत महान

आइये आज का भारत महान देखिये
लाशों पर अट्टहास करता शैतान देखिये
कफन की तिजारत करता बेईमान देखिये
अस्मत का मनोरंजन करती सीता की संतान देखिये
आइए आज का भारत महान देखिये।
दोस्ती में गले मिलकर चुभता खंजर देखिये
वफा का वास्ता देकर जफा की नंगी तस्वीर देखिये
एकता के नारे में अनेकता की तिकड़म देखिये
आइए आज का भारत महान देखिये।
हरित क्रांति के नारे में हरित कटाई देखिये
मद्य निषेध और आबकारी की दो रंगी चाल देखिये
देश भक्ति के नारे से राजनैतिक चाल देखिये
आइए आज का भारत महान देखिये।

अंजू मालवीय, कर्मचारी

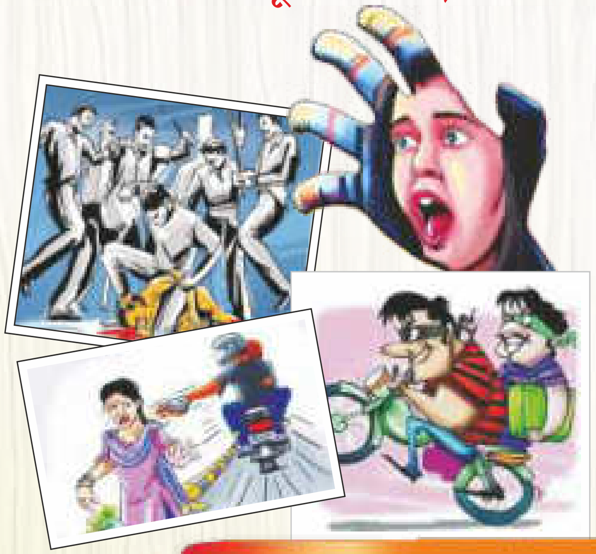

संवेदनहीनता

सड़क के किनारे हम चले जा रहे थे
सड़क पर लाश पड़ी थी लोग कतरा रहे थे
लाश से उठती हुई बदबू तो सहन न होती थी।
लोग नाक पर रूमाल रखकर जा रहे थे
बड़े जोर की चर्चा थी उन जन मानसों में
न जाने किसकी लाश लावारिस पड़ी मैदान में
कत्ल किसने किया कौन जाने
कोई तो आकर कातिल मकतूल को पहचाने
लोग आते गए और यूँ बतलाते गए
हम तो मरने और मारने वाले से घबरा गये
उस भीड़ में लोग कहते थे अब तो इंसानियत मर गई
होगा कोई मरने मारने वाला हमको क्या गरज गई
पास ही एक पेड़ पर बन्दर का बच्चा फुदक रहा था
चारों ओर बन्दर चिल्ला रहे थे वो बच्चा ठुमक रहा था।
आखिर को उसने एक छलांग लगाई
वो बच्चा फुदक कर दूसरी डाल पर जा रहा था
आसमान में कुछ कौवे काँव-काँव कर रहे थे
एक कौआ जमीन पर घायल पड़ा था
देखकर यह दृश्य करूणम् आँखों से अश्क निकल आए
अरे मानवता की सीख देने वाले मसीहाओं
तुम संवेदन में पशु-पक्षी से बहुत पीछे निकल आए।

अंजू मालवीय, कर्मचारी

"एक श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी बोली में पीछे लेकिन अपने कर्म में आगे रहता है।"

मानव में कला का संचार

पवन कुमार शुक्ला, कला प्रवक्ता

जिस प्रकार नेत्रों का कार्य देखना होता है, कानों का कार्य सुनना होता है, उसी प्रकार हृदय का कार्य भावों को जन्म देना होता है। हृदय से उत्पन्न होकर ये भाव शान्त नहीं बैठते हैं, अभिव्यक्ति चाहते हैं। इस अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा बनती है। कभी-कभी भाषा भी भावों को पूर्णरूप से अभिव्यक्त कर सकने में स्वयं को अक्षम एवं असहाय अनुभूत करती है। इस स्थिति में हृदयस्थ भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए जिन अन्य साधनों को अपनाया जाता है वे सभी साधन 'कला' के नाम से अभिहित किये जा सकते हैं। संसार के कलाविदों ने कला को अनेक रूपों में परिभाषित किया है। प्लेटो के अनुसार यदि 'कला' सत्य की अनुकृति है तो विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उसे अनुभूतियों को अभिव्यक्ति करने का माध्यम कहा है। कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने उसे शिवत्व की उपलब्धि के लिए सत्य की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति माना है और सुश्री महादेवी वर्मा ने उसे जीवन की परिधि में सौन्दर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सौन्दर्य कहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'एक व्यक्ति की अनुभूति' को दूसरे तक पहुँचाने को कला स्वीकार करते हैं, वही रस्किन का कथन है कि मानव की बहुमुखी भावनाओं का प्रबल प्रवाह जब रोके नहीं रूकता है तभी वह कला के रूप में फूट पड़ता है।

कला एवं सौन्दर्य परस्पर इतने सम्बद्ध हो गये है कि दोनों के बीच सीमा-रेखा खींचना असम्भव है। जब मानव अपनी कृति में सौन्दर्य का समावेश कर देता है तो वह कलाकृति कहलाने लगती है। वस्तुतः कला का उद्गम सौन्दर्य की मूलभूत प्रेरणा से होता है। सौन्दर्याभिरूचि से कला का जन्म होता है और इससे कलाकार को आनन्द की उपलब्धि होती है। यही 'आनन्द-दान' कला का उद्देश्य होता है। कला में क्षोभ एवं श्रम का परिहार करने की अद्भुत शक्ति होती है। वह मन को रंजन एवं उद्बोधन प्रदान करती है। इसके द्वारा विगत अनुभूतियों की सुखद पुनरावृत्ति होती है। इसी कारण कला को आनन्द प्रदायिनी कहा गया है। इस कला प्रदत्त आनन्द के मूल में कलाकार की सौन्दर्यानुभूति ही प्रमुख कारण होती है। वह कला के माध्यम से अपनी उस सौन्दर्यानुभूति को अभिव्यक्त कर स्वयं आनन्द प्राप्त करता है और दूसरों को भी आनन्द प्रदान करता है।

सृष्टि के असीम सौन्दर्य ने मानव-हृदय में जब अनुभूतियों का ज्वार भर दिया तो उसकी अँगुलियाँ अभिव्यक्ति के लिए छटपटा उठीं। उसने अपनी अनुभूतियों के वेग को सीधी-तिरछी रेखाओं में साकार करना प्रारम्भ कर दिया और फिर यह चित्रण की धारा अबाध गति से आगे बढ़ने लगी। कला का विकास जीवन के सहज वातावरण में होता है। जीवन से अलग रखकर कला को नहीं देखा जा सकता है। परम्परागत संस्कृतियों की श्वास-प्रश्वास में कला समाहित है। उसका अस्तित्व आवासों की दीवारों में, मन्दिरों की मूर्तियों में, पाण्डुलिपियों के पृष्ठों में, वस्त्रों के फलकों में एवं मानव-जीवन के ताने-बाने में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

मातृभाषा हिन्दी

हिन्दी तेरे दर्द की किसे कहाँ परवाह
इक अंग्रेजी साल में, इक हिन्दी सप्ताह।
धड़कन में इंग्लैण्ड है। मुँह पर हिन्दुस्तान।
ऐसे में हो किस तरह से, हिन्दी का उत्थान।
निज भाषा, निज राष्ट्र, निज संस्कृति से परहेज।
गोरो से आगे हुए, हम हिन्दुस्तानी काले लोग।
स्वभिमान को बेचकर, जारी जिनका जश्न।
फिजूल उनके लिए निज भाषा का प्रश्न।
अंग्रेजी के मोह में खोई निज पहचान।
घर के रहे ना घाट के, हम धोबी के श्वान।
दिल्ली तेरे न्याय पर, कैसे हो विश्वास।
अंग्रेजी को राज सुख, हिन्दी को वनवास।
हिन्दी तेरे दर्द की, किसे कहाँ परवाह।
इक अंग्रेजी साल में इक हिन्दी सप्ताह।

धर्मेन्द्र कुमार साहू, कक्षा-12-अ

मनवा कांई कमायो रे

मनवां कांई कमायो रे !
लियो न हरि को नाम विरथा जनम गंवायो रे।
लियो न हरि को नाम विरथा जनम गंवायो रे।
गर्भवास में कष्ट भयो, मालिक तब ध्यायो रे।
बाहर काढौ नाथ। मैं तो अति दुःख पायो रे।
कई जन्म को पाप पुण्य, तूने यहाँ दरसायो रे।
अब भूलूँगी नहीं ऐसो वचन सुनायो रे।
सब संकट तेरा मेट्या मालिक बाहर लाये रे।
काम सरयो दुख बिसरयो हरि याद न आयो रे।
पाछे तू रोय न लाग्यो जुग कहै जायो रे।
साँच केह संसार में कोई रहन न पाये रे।
बाल पणे में बालो-भोलो सारां खिलायो रे।
तरूणि तिरिया ब्याही थान कान उजयारे रे।
सब स्वाँस तेरी बीती, आड़ो कोई न आयो रे।

कपिल पाल, कक्षा-9-ब

सबसे बड़े गुरुजी

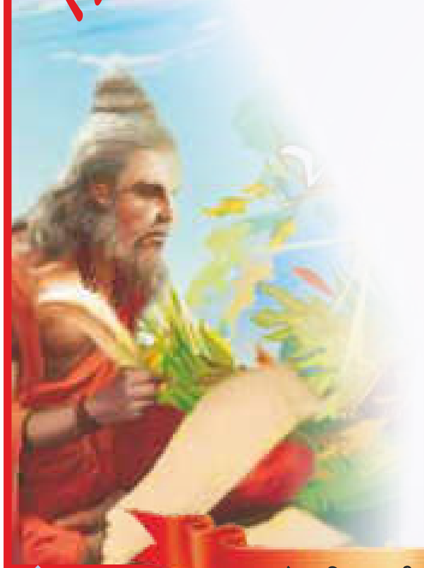

सबसे बड़े कौन है ?
क्या पृथ्वी सबसे बड़ी है ?
यदि पृथ्वी सबसे बड़ी है, तो शेषनाग पर क्यों खड़ी है ?
इसका मतलब शेषनाग जी बड़े है !
यदि शेषनाग जी बड़े है तो शंकरजी के गले में क्यों पड़े हैं ?
इसका मतलब शंकर जी बड़े है ?
यदि शंकर जी बड़े है, तो हिमालय पर क्यों खड़े है ?
इसका मतलब हिमालय बड़ा है !
यदि हिमालय बड़ा है तो हनुमान जी के हाथों में क्यों पड़ा है ?
इसका मतलब हनुमानजी बड़े है !
यदि हनुमान जी बड़े है, तो रामजी के चरणों में क्यों पड़े हैं ?
इसका मतलब रामजी बड़े है !
यदि रामजी बड़े है तो वशिष्ठ गुरू के चरणों में क्यों पड़े हैं ?
इसका मतलब गुरूजी सबसे बड़े है।

कार्तिकेय प्रजापति, कक्षा-7

''जो व्यक्ति अपनी योग्यता में सन्देह में करता है, वह न तो किसी अन्य का भला करता है और न ही अपना।''

सुविचार

व्यवहार अगर अच्छा हो,
मन ही मंदिर है।
आहार अगर अच्छा है तो
तन ही मंदिर है।
विचार अगर अच्छा है तो,
मस्तिष्क ही मंदिर है।
यह तीनों अगर अच्छे है तो
जीवन ही मन्दिर है।

उदास होने के लिए उम्र पड़ी है,
नजर उठाओ सामने जिन्दगी खड़ी है,
अपनी हँसी को होठों से न जाने देना !
क्योंकि आपकी मुस्कुराहट के पीछे
दुनिया पड़ी है ...!!!

आलेख शर्मा, कक्षा-9-ए

तीन बातें

तीन चीजें किसी का इन्तेजार नहीं करती
समय मौत ग्राहक
तीन चीजें कभी नहीं भूलना चाहिए
कर्ज फर्ज मर्ज
तीन चीजों से बचना चाहिए
बुरी संगत स्वार्थ निन्दा
तीन चीजों पर दया करों
बालक भूखे पागल
तीन चीजें का सम्मान करो
माता पिता गुरु

अमन साहू, कक्षा-9-ए

मित्र

भीड़ हमेशा उस रास्ते पर चलती है
जो रास्ता आसान लगताहै,
लेकिन
इसका ये मतलब नहीं की
भीड़ हमेशा सही रास्ते पर ही चलती है !
अपने रास्ते खुद चुनिये क्योंकि
आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता।।

कर्म

जीवन मिलना भाग्य की बात है
मृत्यु होना समय की बात है।
पर मृत्यु के बाद भी लोगों
के दिलों में जीवित रहना
ये कर्मों की बात है।

इंसान

ये जरूरी नहीं है कि
हर रोज मन्दिर जाने से इंसान
धार्मिक बन जाए लेकिन कर्म
ऐसे होना चाहिए कि इंसान
जहाँ भी जाए वहाँ मन्दिर बन जाए।

आलेख शर्मा, कक्षा-9-ए

सुविचार

एक अच्छे चरित्र का निर्माण हजारों बार ठोकर खाने के बाद ही होता है।
'धैर्य' एक कड़ुवा पौधा है, पर इसके फल हमेशा मीठे ही आते है ....।।
''नाम'' एक दिन में नहीं बनता ..... लेकिन अगर ठान लो तो एक दिन जरूर बनता है।
भीड़ का हिस्सा नहीं भीड़ की वजह बनो।
सपने वो नहीं जो नींद में आते है, सपने तो वो है जो नींद ही ना आने दें।

आलेख शर्मा, कक्षा-9-ए

''जो एक स्कूल का दरवाजा खोलता है, वह एक जेल बन्द करता है।''

कोशिश कर, हल निकलेगा

कोशिश कर हल निकलेगा
आज नहीं तो, कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा साध
मरूस्थल में भी जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिंदा रख, दिल में उम्मीदों को
गरज के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो है आज थमा-थमा सा, चल निकलेगा।

ध्रुव केशरवानी, कक्षा-8-ब

जीवन का सत्य

जीवन है एक महासंग्राम
सफलता-असफलता इसके दो - साथी।
जीवन है एक दीये की भाँति
सफलता जेस है एक तेल,
और असफलता एक बाती।
बिना तेल के दीया न जलता,
और बिन बाती
जलता जब जब ये बन जाते,
आपस में दो साथी।
जीवन भी है इसी के भाँति
सफलता-असफलता इसके दो साथी।

हार्दिक केसरी, कक्षा-12-डी (कामर्स)

संघर्ष ही जीवन है

थककर के निराश बैठ कभी उत्साह न खोना।
संघर्षों के लिए जिन्दगी फिर क्या रोना।
अगर काँटो से गुजरना न होता।
तो जीवन का आभास न होता।
मंजिल-मंजिल ही रह जाती।
मानव का इतिहास न होता।
थककर के निराश बैठ कभी उत्साह न खोना।
संघर्ष के लिए जिन्दगी फिर क्या रोना।
चलना ही जब ठान लिया हो।
लक्ष्य पहुँचना मान लिया हो।
पथ को काँटों से क्या डरना।
घृणा मिले या प्यार किन्तु साहस न खोना।
संघर्ष के लिए जिन्दगी फिर क्या रोना।
बादल को घिरे देख कब चाँद छिपा है।
गिरते टूट शलभ कब दीप छिपा है।
कब चातक व्रत छोड़ चुका है।
दृढ़चट्टानों से कब पवन रूका है।
दूरी पैरों को चूमेगी क्षण भर भी आस न खोना।
इतिहास गीत उसी के गाता है।
जो बाधाओं से टकराता है।
वही विश्व में पूजा जाता है।
वही विश्व में पूजा जाता है।
दृग जल अर्ध्य अन्त में पाता।
जीवन का उत्थान इन्हीं संघर्षों में विश्वास न खोना।
संघर्षों के लिए जिन्दगी फिर क्या रोना।
विशेष बाधायें कब बाँध सकी हैं।
आगे बढ़ने वालों को
विपदायें कब रोक सकी है।
मरकर जीने वालों को।
मरकर के निरास बैठ कभी उत्साह न खोना।
संघर्षों के लिए जिन्दगी फिर क्या रोना।

धर्मेन्द्र कुमार साहू, कक्षा-12-अ

Group Photograph

Class I-A Class Teacher : Mrs. BABITA TANDON

Class I-B Class Teacher : Mrs. ASHA DEVI

Group Photograph

Class II-A Class Teacher : Miss. DEEPA SETH

Class II-B Class Teacher : Mrs. SUDHA SAROJ

Group Photograph

Class III-A   Class Teacher : Mrs. RENU SINGH

Class III-B   Class Teacher : Mrs. SANDHYA MEHROTRA

Group Photograph

Class IV-A   Class Teacher : Mrs. SUCHITA MISHRA

Class IV-B   Class Teacher : Mrs. KAVITA BHARTI

Group Photograph

Class V-A **Class Teacher : Mrs. NIVEDITA PRAJAPATI**

Class V-B **Class Teacher : Mrs. SHIKHA MALVIYA**

Group Photograph

Class I Class Teacher : Mrs. RENU TANDON

Class II Class Teacher : Mrs. RACHANA MALVIYA

Group Photograph

Class III — Class Teacher : Mrs. ARTI MEHROTRA

Class IV — Class Teacher : Mrs. AKANSHA SEHGAL

Group Photograph

Class V **Class Teacher : Mrs. PRIYANKA AGRAWAL**

Class VI **Class Teacher : Mrs. SHOMA MISHRA**

Group Photograph

Class VII **Class Teacher : Miss ANAMIKA TIWARI**

Class VIII **Class Teacher : Mrs. GARIMA GUPTA**

Our Artists

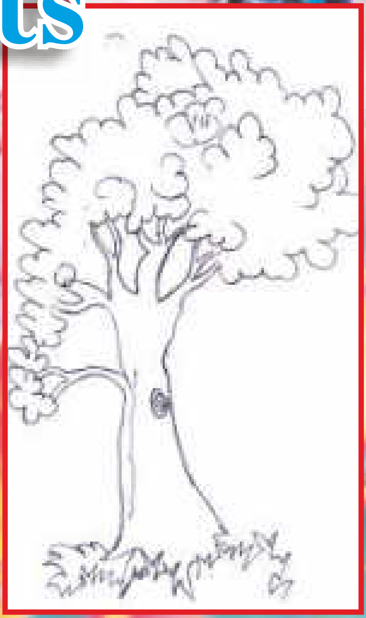

कैरियर *in* कम्प्यूटर

बी.एन. मिश्र

एक समय था, जब विकल्प सीमित थे। लेकिन वर्तमान परिवेश में 12वीं के बाद विद्यार्थियों के लिए विभिन्न कोर्सों और विकल्प की असीम लाइनें खुली है जिनमें वे अपनी रूचि और स्कोप के हिसाब से चयन कर सकते है, जिससे कि उनमें भविष्य को संवारने व रोजगार प्राप्त करने में असुविधा न हो, दूसरों की नकल से बचें। कारण हर विद्यार्थी का लक्ष्य, प्रतिभा औत्र अभिरूचि अलग होती है। इनमें से एक कम्प्यूटर कोर्स एक प्रमुख विकल्प हो सकता है जिसमें आप अपनी रूचि, जरूरत और डिमांड के अनुसार कोर्स का चुनाव कर सकते है।

कुल लोकप्रिय और डिमांडिंग कम्प्यूटर डिप्लोमा कोर्सेस निम्न है :

- DCA (Diploma in Computer Application)
- DIT (Diploma in Information Technology)
- DCM (Diploma in Computer Multimedia)
- Diploma in Cyber Security / Law
- Computer Professional Courses
- Digital Marketing Courses
- Mobile Application Development Courses
- Software & Programming Language Course
- Basic Computer Courses
- CCC
- DTP
- WEB Designing
- Animation & Multimedia
- Computerised Accounting
- Networking
- Data Analyst / Domain Analyst etc.
- Best Computer Courses
- Digital Marketing Courses
- SEO Courses
- Data Analytics Courses
- Web Developor Courses
- Game Designer Courses

Computer Programming Courses

Course	Name of Computer Courses	Period	Min. Eligibility
BCA	Bachelor of Computer Applications	3 years	12
MCA	Master of Computer Applications	3 years	Graduation
B.Sc.	Bachelor of Science (Computer Sc.)	3 years	12
M.Sc.	Master of Science (Computer Sc.)	2 years	Graduation
B.Tech. (CSE)	Bachelor of Technology (Computer Sc. & Engineering)	4 years	12
B.Tech. (IT)	Bachelor of Technology (Information Technology)	4 years	12
M.Tech. (CSE)	Bachelor of Technology (Computer Sc. & Engineering)	2 years	B.Tech / B.E.
M.Tech. (IT)	Bachelor of Technology (Information Technology)	2 years	B.Tech./B.E.
B.E. (CSE)	Bachelor of Engineering (Computer Sc. & Engineering)	4 years	12
B.E. (IT)	Bachelor of Engineering (Information Technology)	4 years	12

ये हौसलों की उड़ान है, रूकना नहीं
आगे पूरा आसमान है, रूकना नहीं।
लांघ जाना उफनाती, दरियाओं को
मंजिलों तक थकना नहीं, रूकना नहीं

मीडिया की नज़र में हमारा विद्यालय

दिव्य कुम्भ-भव्य कुंभ प्रदर्शनी की हुई सराहना

नेशनल ऐरोबिक्स चैम्पियनशिप में खेलेगी

बाल वैज्ञानिकों ने पढ़े शोध पत्र

सिटी लाइव

पिता फुटपाथ पर बेचता है कपड़े होनहार बेटा जाएगा आईआईटी

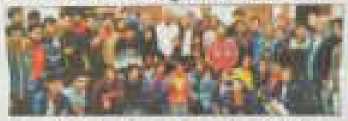

दिव्य कुम्भ-भव्य कुंभ प्रदर्शनी की हुई सराहना

प्रयागराज। हरिश्चन्द्र मानव कल्याण शिक्षा एवं शोध संस्थान अम्बेडकर बिहार की ओर से आज शिव चरण दास कन्हैया लाल इंटर कालेज प्रयागराज में दिव्य कुम्भ-भव्य कुंभ की एक लघु फिल्म छात्रों के समक्ष प्रदर्शित की गई। जिसका शुभारम्भ जिला विद्यालय निरीक्षक आर.एन. विश्वकर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर संस्था के सचिव राजीव मिश्र संयोजक पवन द्विवेदी द्वारा निर्मित एवं निर्देशित लघु फिल्म को विद्यार्थियों ने खूब सराहा।

छात्राओं को अपनी सुरक्षा खुद करनी चाहिए:एडीजी

चलचित्र से कुंभ की यादें हुई ताजा

छात्राओं को सुरक्षा के प्रति किया जागरूक

लोगों ने उत्साह से सीखे स्वस्थ रहने के गुर

दिव्य कुंभ और भव्य कुंभ पर देखी फिल्म

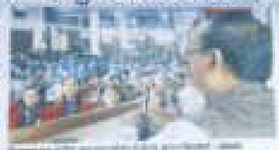

यूपी टीईटी को पंजीकरण का आज

मीडिया की नज़र में हमारा विद्यालय

'परीक्षा पे चर्चा' का विद्यालयों में किया गया सीधा प्रसारण

प्रायोगिक परीक्षा आज

प्रयागराज। शिव चरण दास कन्हैया लाल इंटर कालेज के प्रधानाचार्य ... ने बताया कि इंटर ... के छात्रों की प्रायोगिक परीक्षा ... जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान और कम्प्यूटर विज्ञान की प्रायोगिक परीक्षा 11 जनवरी को और जीव विज्ञान का 12 जनवरी को प्रायोगिक परीक्षाएं होंगी। ... प्रायोगिक परीक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

प्राइमरी स्कूल आज रहेंगे बंद

प्रयागराज। ... ने बताया कि सभी बोर्डों के ... स्कूल ... को बंद रहेंगे। ...

न्यूज़ ...

यूपी बोर्ड के कॉलेजों में प्रायोगिक परीक्षाएं

छात्रों ने देखी दिव्य कुंभ, भव्य कुंभ पर लघु फिल्म को सराहा

भू-माफियाओं के खिलाफ को ... सीआईएसएफ

स्कूलों में मनाया गया मतदाता दिवस

बैंड-बाजे के साथ निकाली रैली

लोगों ने उत्साह से सीखे स्वस्थ रहने के गुर

बाल विज्ञानियों ने ...

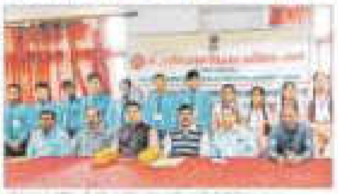

अपनों की रक्षा

विद्यार्थियों को दी सबकी के बेहतर तालमेल की जानकारी

पं0 जवाहर लाल नेहरू के चित्र पर कांग्रेसियों ने चढ़ाये पुष्प

स्कूल-कालेजों में हुए रंगारंग कार्यक्रम

हनुमत दास, अभिकुल, सेंट अंथोनी स्कूल प्रथम

मेजर ध्यानचन्द से सीख लें खिलाड़ी

छात्रों ने देखी दिव्य कुम्भ-भव्य कुम्भ की लघु फिल्म

चित्रकूट अमावस्या में

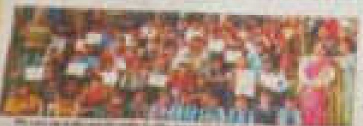

हिम्मतगंज में घर में लगी आग, फायर ब्रिगेड ने काबू पाया

प्रयागराज

बच्चों ने प्यारे चाचा को किया याद, दी श्रद्धांजलि

प्रबन्ध समिति

शिवचरणदास कन्हैयालाल इण्टर कालेज, इलाहाबाद

क्र.सं.	पदाधिकारियों का नाम	पद
1.	श्री वीरेन्द्र मोहिले	अध्यक्ष
2.	श्री रतन जी कपूर	उपाध्यक्ष
3.	श्री धीरज खन्ना	प्रबन्धक
4.	श्री प्रमोद कुमार अरोरा	उप-प्रबन्धक
5.	श्री दीपक खन्ना	कोषाध्यक्ष
6.	डॉ0 आर. के. टण्डन	सदस्य
7.	श्री बसन्त कुमार खन्ना	सदस्य
8.	श्री महेश जी कपूर	सदस्य
9.	श्री राकेश अरोरा	सदस्य
10.	श्री अरूण किशोर खन्ना	सदस्य
11.	श्री रवि मेहरोत्रा	सदस्य
12.	श्री नीरज मेहरोत्रा	सदस्य
13.	श्री राकेश चड्ढा	सदस्य
14.	श्री रजत महरोत्रा	सदस्य
15.	श्री लालचन्द्र पाठक	सदस्य
16.	श्री संगल लाल	प्रधानाचार्य
17.	श्रीमती शिखा मालवीय	अध्यापक प्रतिनिधि
18.		अध्यापक प्रतिनिधि

स्थाई आमंत्रित सदस्य

क्र.सं.	पदाधिकारियों का नाम	पद
1.	श्री राजीव खन्ना	अध्यक्ष सोसाइटी
2.	श्री अमित खन्ना	सचिव सोसाइटी

विशेष आमंत्रित सदस्य

क्र.सं.	पदाधिकारियों का नाम	पद
1.	मा0 न्यायमूर्ति श्री अरूण टण्डन	उपाध्यक्ष सोसाइटी
2.	श्रीमती अंशिका बुधवार	कोषाध्यक्ष सोसाइटी

प्राइमरी विभाग

बैठे हुए (बायें से दायें) : श्रीमती निवेदिता प्रजापति, श्री लालचन्द्र पाठक (प्रधानाचार्य), श्रीमती शिखा मालवीय, श्रीमती सुमिता, (प्रभारी), श्रीमती कविता भारती
खड़े हुए (बायें से दायें) : श्रीमती सुधा सरोज, श्रीमती सुचिता मिश्रा, श्रीमती आशा देवी, श्रीमती संध्या मेहरोत्रा, श्रीमती बबिता टण्डन, सुश्री दीपा सेठ

अंग्रेजी माध्यम

(बायें से दायें) : श्रीमती आरती मेहरोत्रा, श्रीमती प्रियंका अग्रवाल, श्रीमती सोमा मिश्रा (प्रभारी), श्री विश्वनाथ मिश्रा श्री लालचन्द्र पाठक (प्रधानाचार्य), श्री पी.एन. त्रिपाठी, सुश्री अनामिका तिवारी, श्रीमती रेनू टण्डन, श्रीमती आकांक्षा सहगल, श्रीमती रचना मालवीय

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी वर्ग

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के साथ प्रधानाचार्य श्री लालचन्द्र पाठक
साथ में श्री शिशिरेन्द्र चौरसिया (प्रधान लिपिक)

इण्टरमीडिएट (प्रवक्ता गण)

(बायें से दायें) श्री पवन कुमार शुक्ला (कला), श्री धर्मबीर सिंह (हिन्दी), श्री कमलाकांत शुक्ला (भौतिकी), श्री धर्मवीर प्रसाद (नागरिक शास्त्र), श्री त्रिभुवन तिवारी (अंग्रेजी) श्री राम सिंह (संस्कृत), श्री लालचन्द्र पाठक (प्रधानाचार्य), श्री प्रमोद कुमार पाल (जीव विज्ञान), श्री प्रवीन्द्र नारायण त्रिपाठी (इतिहास), श्री प्रेम कुमार सिंह (अर्थशास्त्र), श्री मैलविन लार्टियस (व्यायाम), श्री महेन्द्र सिंह (गणित), श्री ज्ञान प्रकाश सिंह (रसायन)

हाईस्कूल विभाग (सहायक अध्यापक)

(बायें से दायें) श्री अभय सेठ, श्री योगेन्द्र पाण्डेय, श्री पारसनाथ, श्री संजय सरकार, श्री संतोष कुमार सिंह, श्री सुभाष कुमार वर्मा, श्री लालचन्द्र पाठक (प्रधानाचार्य), श्री प्रमोद कुमार पाल (उप-प्रधानाचार्य), श्रीमती उर्मिला मिश्रा, श्री जीतलाल यादव, श्री संगमलाल, श्री उमेश कुमार उपाध्याय, श्री सत्येन्द्र त्रिपाठी, श्री श्याम बिहारी सिंह

हमारा आकर्षण :

- स्मार्ट क्लासेस की सुविधा
- भव्य वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला
- रसायन एवं भौतिक विज्ञान की पूर्ण सुसज्जित प्रयोगशालायें

- भव्य एवं समृद्ध वातानुकूलित पुस्तकालय
- शुद्ध एवं स्वच्छ पेयजल हेतु वाटर कूलर एवं एक्वागार्ड की व्यवस्था
- छात्रों में कौशल विकास हेतु पाठ्य सहगामी क्रिया–कलापों एवं वीडियो कक्षाओं का संचालन

- प्रांगण में अनुशासन एवं सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था
- सम्पूर्ण परिसर सी.सी.टी.वी. कैमरों से आच्छादित
- प्रवेश द्वार पर सुरक्षा गार्ड की तैनाती

- आगन्तुकों हेतु विजिटिंग रजिस्टर में एन्ट्री प्रक्रिया का अनिवार्य रूप से पालन
- कला, वाणिज्य, कम्प्यूटर एवं विज्ञान–सभी वर्गों में उत्तम शिक्षण व्यवस्था
- खेल–कूद, स्काउट्स एवं एन.सी.सी. की सुविधा

सारस्वत खत्री पाठशाला, प्रयागराज
स्थापित 1921
तमसो मा ज्योतिर्गमय

द्वारा संचालित

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसाइटी

235/179, अतरसुइया, प्रयागराज-211003 फोन/फैक्स : 0532-2452224
ई–मेल : khatripathshala@gmail.com Website : www.skpallahabad.com

Printed by : SIDDHARTH #9559653887